श्रीगणेशायनमः

अथकालज्ञानप्रकरणम्॥

अथाष्टभिःस्थानैरामयपरीक्षणम्॥ ॥

रोगाक्रान्तशरीरस्य स्थानान्यष्टौ परीक्षयेत्॥
नाडीमूत्रमलंजिव्हाशब्दस्पर्शश्चरूपदृक्॥१॥
अनन्तर अष्टस्थानसे आमय परीक्षा कहते हैं रोगाक्रान्तशरीर
शिष्ट मनुष्योंका अष्टस्थानसेपरीक्षाकरैं यथा नाडी१ मूत्र२ मल
जिव्हा४ शब्द५ स्पर्श६ रूप७ दृक्८ अर्थात् नेत्र एही अष्टस्थान
दर्शनंस्पर्शनंप्रश्नैर्व्याधेर्ज्ञानंत्रिधामतम्॥ (है१
दर्शनान्मूत्रजिव्हाद्यैः स्पर्शनान्नाडिकादिभिः॥
प्रश्नैर्दूतादिवचनादितित्रेधातदुच्यते॥२॥
दर्शन स्पर्शन एवं प्रश्नद्वारा व्याधिका निरूपण होताहै अर्थात्
मूत्र जिव्हादि दर्शनसे वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक द्वन्द्वज सन्निपाति
क लक्षण बोध होताहै एवं सुखसाध्य कृच्छ्रसाध्य असाध्य ज्ञान
नाडिकादिस्पर्शसे एवं दूतवाक्यसे तावत् लक्षण बोधहोताहै अ
तएव रोगलक्षण कथनानन्तर मूत्र एवं नेत्र जिव्हा चिन्ह और ना
डिज्ञान दूतवाक्य विचार कथित हुआ॥२॥ ॥

अथजिव्हापरीक्षामाह

जिव्हापरीक्षाक्षिमूत्रपरीक्षाच पृथक्पृथक्॥
कथयामिसमासेनलक्षणंमुनिभाषणात्॥३॥
अनन्तर जिव्हापरीक्षा कहते हैं जिव्हा एवं नेत्र तथा मूत्र परीक्षा
दिका ज्ञान पृथक् पृथक् मुनिवाक्यानुसार संक्षेपसे कहते हैं॥३॥
जिव्हापीताखरस्पर्शास्फुटितामारुताधिके॥

रक्ताश्यावा भवेत् पित्ते कफात् शुक्ला द्रवा घना॥४॥
वायुके आधिक्यमे जिह्वा पीतवर्णा एवं खरस्पर्शा अर्थात् स्पर्शमे खर एवं फटी फटी होतीहै और पित्ताधिक्यमे रक्त मिश्रित श्यामवर्णा होतीहै एवं कफाधिक्यमे शुक्लवर्णा आर्द्रा और घना अर्थात् पुष्टा होतीहै ॥४॥

कृष्णा सकंटका शुष्का सन्निपाताधिके मता॥
मिश्रिते मिश्रिता ज्ञेया रिष्टेलक्षणवर्ज्जिता॥
मनुष्याणां भवेद्घोरा जिह्वा विषविसर्पिणी॥५॥६

सन्निपाताधिक्यमे जिह्वा कृष्णवर्णा होतीहै एवं सकंटका अत एव सोई रसना कष्टके सहित वर्तमान एवं कदापि शुभ्रवर्णा होती है द्वन्द्वज दोषमे उभय चिन्हा होती है एवं नितांत मरणरूप चिन्ह वर्ज्जिता अर्थात् कथित चिन्ह का कोई चिन्ह नहीं रहता अन्यप्रकार चिन्ह होता है एवं भयानक लम्बमाना होके मुखसे बाह्य होती है अथवा जिह्वा उलट जाती है इत्यादि भिन्नभिन्न चिन्हको असाध्य चि[न्ह] कहते हैं॥५॥६॥

अन्यच्च॥ वातेन स्फुटिता जिह्वा सुप्ता शाकदलो पमा॥ सरक्ता कंटका पित्ते श्लेष्मणा सुप्त लिप्तका॥
मिश्र लिङ्गे द्वन्द्वजा च सर्वैः सर्व्वं विभावयेत्॥७॥

अन्यप्रकार चिन्ह यथा वायुमे स्फुटिता अर्थात् विसीर्णा एवं जडा और शाक पत्र तुल्या होतीहै और पित्तमे रक्त वर्णा होतीहै एवं कंटकप्राप्ता अर्थात् कंटक सदृशा होती है कफमे स्पन्दरहिता एवं लेप युक्ता मिश्रित दोषमे दोषद्वयका चिन्ह एवं सन्निपातिकमे दोष त्रयका चिन्ह होताहै ॥७॥

जिह्वा वातात् प्रसुप्ता स्फुटित विकसिता शाकप त्रोपमेया पित्तादक्ता सदाहा भवति च परितः कंट केर्व्याप रीता॥ गुर्वी स्थूला सशीता श्रितबहुल कफा शाल्मलीकंटकाभा सर्व्वैः स्यात् सर्व लिङ्गा सितरुधिरवहा चित्रवर्णा निरुक्ता॥८॥९॥

अन्यप्रकार चिन्ह कथित होता है यथा वायुमे जिह्वा ज्ञानरहिता

एवं प्रकाशितरूपमें विसीर्णा और शाकपर्ण सदृशा पित्तमें दाहयुक्ता एवं रक्तवर्णा और साकल्यस्थान जिह्वामें कंटकवत् होता है कफमें स्थूला शीतला बहुश्लेष्मान्विता एवं शेमर कंटकसदृश विशाल कांटा युक्त होती है सन्निपातमें यही साकल्य लक्षण युक्ता अथ च कृष्णरुधिरवाहिनी एवं नानावर्णयुक्ता एवं रूक्षा होती है॥ ८१

अथ नेत्रपरीक्षामाह

अरुणं धूम्रवर्णञ्च सरौद्रञ्च सचञ्चले ॥
अभ्यन्तरे किंचिद्दाहं वाते नेत्रं तदुच्यते॥ १०॥

वातिकमें नेत्रका एतादृश लक्षण होता है अर्थात् रक्तवर्ण धूम्रवर्ण रौद्रवर्ण अर्थात् भयानकवर्ण एवं चञ्चल और अन्तर में किञ्चित् दाह होता है ॥ १० ॥

हरिद्रापीतसंकाशं रक्तं वा नीलवर्णकम्॥
दीपद्वेषी ससन्तापं पित्ते नेत्रं तदुच्यते॥ ११॥

पित्ताधिक्यमें नेत्र एतद्रूप चिन्ह होता है यथा हरिद्रा सदृश पीतवर्ण एवं रक्तवर्ण अथवा नीलवर्ण मिश्रित होता है एवं दीपदर्शनसे सन्ताप युक्त होता है ॥ ११॥

सजलं विह्वलं श्वेतं ज्योतिर्हीनं सचञ्चलम्॥
वीक्ष्यते मन्दमन्दञ्च तच्चक्षुः कफजं विदुः॥ १२॥

कफाधिक्यमें नेत्र सजल होता है दृष्टि विह्वल शुक्लवर्ण ज्योतिहीन एवं चञ्चल अल्पदर्शन होता है ॥ १२॥

अन्यच्च॥ नेत्रं धूम्रं सजलमनिले रात्रिपीतेन तुल्यं नीलं दीपासहत्वं सरुधिरमसितं दाहयुक्तञ्च पित्ते॥ मन्दं मन्दञ्च पश्येत् ससितजलमतः कान्तिहीनं कफात्तु तेषं द्वंद्वाद्धि लिङ्गं त्रिमलजनयनं श्याम भुग्नं सरौद्रम्॥ १३॥ १४॥

अन्यप्रकार चिन्ह यथा वायुमें नेत्र धूम्रवर्ण एवं रूक्ष और सजल एवं हरिद्रा तुल्य पीतवर्ण होता है पित्ताधिक्य में नीलवर्ण प्रदीपद्वेषी कृष्णवर्ण एवं रक्तवर्ण मिश्रित तथा दाहयुक्त होता है

और कफमे मन्द मन्द दृष्टि शुक्लवर्ण जलयुक्तदीप्तिहीनहोता है द्वन्द्वजसेद्विदोषकाललक्षण त्रिदोषमे त्रिलक्षण मिलितएवं धूयामवर्णओर भुग्न नेत्र अतिभयानकहोताहै ॥१३॥१४॥ ॥

अन्यच्च॥शुक्लेकफेऽक्षिणीज्ञेयेरक्तेपित्तेसपीतके॥ रूक्षेधूम्रेतथावातेसुस्थेपद्मदलोपमे॥श्यावंनिर्भग्नसंकाशं तंद्रामोहसमन्वितं॥ सरौद्रंरक्तवर्णञ्चभवेच्चक्षुस्त्रिदोषजं॥ एकचक्षुर्यदारौद्रमुन्मीलतिनिमीलति॥ त्रिभिर्दिनैर्विजानीयात्सयातियममन्दिरं॥कालज्योतिर्विहीनञ्चगताभ्यन्तरलोचनं॥मन्ददृष्टिर्विशेषेणकालप्राप्तमादिशेत्॥एकचक्षुरचैतन्यंविभ्रमंस्फुरणंनच॥दिनैकेनविजानीयात्तस्यमृत्युर्नसंशः॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९

अन्यप्रकार एही सकललक्षणान्वित नेत्रहोताहै यथाकफसे शुक्लवर्ण पित्तसे रक्तवर्ण एवं पीतवर्ण वातसेधूम्रवर्ण अथच रूक्ष एवं सुस्थ अतएव सपद्म पुष्पदल सदृश और सन्निपातमेश्यामवर्ण अन्तःप्रविष्ट भुग्न नेत्र एवं तंद्रा मोहयुक्त भयानकरक्तवर्णहोताहै सन्निपातिक लक्षणान्वित एकनेत्रजो मनुष्य भयानकरूपसेउन्मीलन एवं मिलनकरै सोई मनुष्य त्रयदिवस केमध्यसे यमालयगमन करतेहैं औरकृष्ण वर्णज्योतिहीन नेत्र अथच कोटराक्ष अर्थात् अन्तः प्रविष्ट नेत्र एवं मंद दृष्टि सोई मनुष्य अवश्यकरकै कालप्राप्तहोतेहैं एक नेत्रचेतनारहित विघूर्णितस्फुर्त्तिहीन तस्य एक दिवसके मध्यमे मृत्युहोती है संशयनहीं॥ १५॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ * ॥ ॥

अथनासिकापरीक्षा

शुक्लाशुष्कागुरुश्यावालिप्तलुप्ताचनासिका॥ नासिकामंडविकृतासंवृतापित्तकाचिता॥उच्चावास्फुटितास्यानात्मरणायभवेन्नृणां॥२०॥

नासिकाशुक्लवर्ण अथवा श्यामवर्ण एवंशुष्कवापुष्ट अथवा वक्र

गति होना और बैठजाना एवंघ्राणेन्द्रिय का नाश अर्थात् गंधरहित एवं स्फुटिताहोताहै वा अन्यपीडायुक्त होताहै एवंनासाग्रमे अत्यंत स्फोटक होताहै एतादृश चिन्ह मृत्युलक्षण अपर मलचिन्ह एवं निश्वास चिन्ह और नेत्र तथा त्वचा चिन्ह इत्यादि स्वस्व रोगके निदान मे विख्यात करेंगे यथा अतीसारमे मलचिन्ह श्वास अथवा अन्यरोग मे निश्वास काचिन्ह एवं आंत्रिक रोगमे और ज्वर कास इत्यादि रोग मे घर्म्म चिन्ह अर्थात् पसीना तथा हलीमकादिरोग मे नेत्र चिन्ह निर्दिष्टहोताहै सो पश्चात् विख्यातकरैंगे॥ २०

अथमूत्रपरीक्षा

पश्चिमेरजनीयामेघटिकापाञ्चतुष्टये॥उत्थाप्यरो
गिणांवैद्योमूत्रोत्सर्गन्तुकारयेत्॥आद्यधारांपरि
त्यज्यमध्यधारासमुद्भवम्॥शुभ्रेकाञ्चमयेपात्रेधृ
त्वामूत्रंपरीक्षयेत्॥संगृह्यरोगिणोमूत्रं सूर्य्यरश्मि
षुधारयेत्॥तस्यमध्येक्षिपेत्तैलंततोरोगंविचारयेत्॥ ॥२१॥२२॥२३॥

रात्रिके उत्तरार्द्ध द्वितीयप्रहरमे चतुर्घटिका अवशिष्ट रहनेसे वैद्य रोगीको उत्थान करायके मूत्रोत्सर्ग करावैं तत्पश्चात् मूत्रका प्रथम धारा परित्याग करके मध्यधारा मूत्रको दिव्यकाञ्चपात्रमे निक्षेपकरै सोई मूत्र सूर्य्योदयसमय घर्म्ममे स्थापनकरके तैलबिन्दु निक्षेपद्वारा रोगका विचारकरैं ॥२१॥२२॥२३॥ ॥

पित्तेनपाण्डुरंमूत्रं सफेनंकफरोगिणाम्॥रक्त
वर्णंभवेत्वातेद्वन्द्वजेमिश्रितंभवेत्॥सन्निपा
तेतुकृष्णंस्यादेतन्मूत्रस्यलक्षणम् ॥२४॥ ॥

पित्ताधिक्यमे श्वेत लोहित मिश्रित वर्ण मूत्रहोताहै अर्थात् पाण्डुवर्ण एवं वातदोषमे रक्तवर्ण और कफकोपमे फेन विशिष्ट द्विदोषमे द्विचिन्ह एवं त्रिदोषमे मिलित चिन्ह यथा वात पित्तमे पीत एवं रक्तवर्ण वातश्लेष्मामे फेनाधिक्य एवं रक्तवर्ण पित्तश्लेष्मामे पाण्डुवर्ण एवं फेनयुक्त समस्त मिलित अर्थात् त्रिदोषसे कृष्णवर्ण होताहै ॥२४॥

अन्यच्च॥अच्छंचरुसञ्चसितञ्चवातादुष्णारु

णं पीतमथोः तिपित्तात्॥ स्निग्धं घनं शुक्लतरं कफाच्च मिश्रैस्तु मिश्रं सकलस्य चिन्हं॥ वातेन मंडं वन्धाति पित्तेन बुद्बुदायते॥ कफेन बिन्दु मायाति निमज्जति त्रिदोषके॥ २५॥ ५॥ ॥

प्रमाणान्तर कहते हैं वाताधिक्य मे मूत्र निर्मल एवं रूक्ष तथा सित वर्ण होता है एवं पित्ताधिक्य मे उष्ण मिलित रक्तवर्ण एवं पीतवर्ण और कफाधिक्य मे स्निग्ध एवं सान्द्र अतिशय शुक्लवर्ण एवं त्रिदोष मे मिश्रित सम्पूर्ण चिन्ह होता है और वात दोष से मूत्र मंडाकार अर्थात् जम जाता है तथा पित्त दोष से बुद्बुदाकार एवं कफ से विन्दुभाव प्राप्त होता है सन्निपात से मूत्र मे तैल विन्दु निमग्न होता है॥ २५॥॥

भद्रपीठपृथुकदर्पणपद्मछत्रशंखसचामरवीणाः॥ कुण्डलाकृति यदि भवेत्तैलं रोगिणो हि यस्य स तु साध्यः॥ २६

जो रोगी के मूत्र मे तैलविन्दु निक्षेप करने से भद्रपीठ अर्थात् पीढा के ऊपर चित्राकार सदृश दृश्य होय एवं पृथुक अर्थात् चिउरा वा चिपिटक के आकार एवं दर्पणाकार और पद्मपुष्प सदृश किम्वा छत्राकृति तथा शंखसदृश एवं चामरतुल्य किम्वा वीणाकृति अथवा कुण्डलाकार होता है सोई रोगी का रोग साध्य जानना॥ २६॥ ६॥

पक्षिकूर्म्मवृषसिंहशूकरैः सर्पवानरविडालवृश्चिकैः॥ कुक्कुटैश्च सदृशन्तु रोगिणो यस्य मूत्रपतितं स गतायुः॥ २७॥

रोगी के मूत्र मे तैलबिन्दु पतित होने से यदि पक्ष्याकार कच्छपाकार वृषाकार सिंहाकार शूकराकार सर्पाकार वानराकार विडालाकार वृश्चिकाकार एवं कुक्कुटाकार विशिष्ट होय तो सोई रोगी गतायु अतएव शान्ति उपाय रहित जानना॥ २७॥

श्वेतधारा महाधारा पीतधारा तलाज्वरः॥
रक्तधारा दीर्घरोगः कृष्णा च मरणं ध्रुवं॥
सौवीरेण समं शस्तं मातुलुंग समप्रभम्॥
पानीयस्य समं मूत्रं अपक्वरसतो भवेत्॥ २८॥

श्वेतधारा एवं महाधारा तथा पीतधारा मूत्रश्रावसे ज्वररोग एवं रक्तधारासे दीर्घरोग और कृष्णधारासे ध्रुवमरण होताहै एवं सौवीर अर्थात् सिरका सदृश वर्ण मूत्र होनेसे शुभ एवं मातुलुङ्ग अर्थात् विजौरा नीबू वर्ण सदृश आकृति होनेसे शुभ एवं जलतुल्य आकृति द्वारा अपक्क रस होताहै ॥ २८ ॥ ७ ॥

अधोबहुलमारक्तं मूत्रमालोक्यते यदा ॥ वदंति तदतीसारं लिङ्गं तु लिङ्गवेदिनः ॥ जालोदरसमुद्भूतं मूत्रं घृतकणोपमम् ॥ आमवाते वसातुल्यं तक्रतुल्यं तु जायते ॥ वातज्वरसमुद्भूतं मूत्रं कुंकुमपिंजरं ॥ मलेन पीनवर्णं च बहुलं च प्रजायते ॥ २९ ॥

अधोभागमे अत्यन्त रक्तदृष्टिद्वारा अतिसाररोग एवं घृतकणा सदृश मूत्र दर्शनसे जलोदरीरोग होताहै आमवातमे वसा सदृश एवं तक्रतुल्य मूत्र होताहै वातज्वरमे कुंकुम सदृश पीतरक्तवर्ण मूत्र एवं मलद्वारा पीतवर्ण एवं बाहुल्य होताहै २९

पीतमच्छं च जायेत मूत्रं पित्तोदयेसति ॥ समधातो पुनः कूपजलतुल्यं प्रजायते ॥ मूत्रं च कृष्णतां याति क्षयरोगाकुलस्य च ॥ क्षयरोगी भवेद्यस्तु तमसाध्यं विनिर्दिशेत् ॥ ऊर्द्धं पीतमधो रक्तं मूत्रं वैद्यवरस्तदा ॥ पित्तप्रकृतिसंभूतं सन्निपातस्य लक्षयेत् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२

पित्ताधिक्यमे पीत और स्वच्छ अर्थात् निर्मल मूत्र होताहै तथा समधातुमे कूपजलतुल्य क्षयरोगाकुल मनुष्यका कृष्णवर्ण मूत्र होताहै सोई क्षयरोगवान् मनुष्य असाध्य होतेहैं एवं ऊर्द्ध भागमे पीत और अधोभागमे रक्तदर्शन द्वारा वैद्यवर पित्तप्रकृतिसंभूत सन्निपात वा त्रिदोषका लक्षण कहतेहैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२

यस्येक्षुरससंकाशं मूत्रं नेत्रे च पिंजरे ॥ र साधिक्यं विजानीयान्निर्दिशेत्तस्य लंघनं ॥ पीतं च बहुलं चैव आमवातात्प्रजायते ॥ र क्तं स्वच्छं च यन्मूत्रं तज्ज्वराधिक्य लक्षणम् ॥ +

धूम्रवर्णे यदा मूत्रं ज्वराधिक्यं वदेत्तदा॥ कृष्णम
च्छं च जानीयात्सन्निपातज्वरोद्भवम्॥ ३३॥ ३४॥ ३५
जिस मनुष्यका मूत्र इक्षुरसके सदृश होय एवं नेत्र पिङ्गरवर्ण होयतो रसाधिक्य ज्ञान करके लंघनका निर्देश करै पीत वर्ण एवं बहुमूत्र होनेसे आमवातरोग होताहै रक्त एवं स्वच्छ मूत्र से ज्वराधिक्य लक्षण होताहै धूम्र वर्ण मूत्रसे ज्वराधिक्य कृष्ण एवं स्वच्छ मूत्र से सन्निपातज्वर॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ॥

पीतं तथोपरि कृष्णाच्छायं बुद्बुदसंयुतं॥ मूत्रं प्रसू
तिदोषेण संशयो नात्र वैद्यराट्॥ आपीतरक्तफेनाधि
मस्तुचेक्षुरसोपमम्॥ पित्ते निर्लेके फे मूत्रं निरामे च ज्व
रे भवेत्॥ तैलविन्दुर्यदा मूत्रे विकारान् कुरुते स्वपम्॥
स्वरूपं तस्य वक्ष्यामि शुभाशुभचिकित्सितम्॥ ३९॥ ४०॥ ४१
पीत तथा उपरिभागमे कृष्ण एवं बुद्बुद युक्त मूत्र होनेसे प्रसूतिदोष तथा पित्ताधिक्यसे पीतवर्ण एवं वाताधिक्यसे रक्त तथा कफाधिक्यसे फेनतुल्य और निरामसे मस्तु अर्थात् विजौरानीबू सदृश एवं ज्वरमे इक्षु रसोपम होताहै एवं मूत्रमे तैल बिन्दु विकृति प्राप्त होयतो सोई मूत्रका स्वरूप और शुभाशुभ एवं चिकित्सा कहते है॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥

चिकित्सकैः कूर्म्महलं सोरभाकृतिजं भुजं॥ क
रभं मण्डलं कोलं असाध्यं से वलक्षणम्॥ चतुः
पंथं त्रिपंथं च द्विपथञ्चैव दृश्यते॥ एकपंथं य
दा विन्दुर्मृत्युस्तस्य न संशयः॥ शस्त्रं खड्गं धनुर्द
ण्डं मुसलं वज्रशूलकं॥ लकुटाकारं यदा तैलं
तत्क्षणं वा वशानिकम्॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥
कूर्म हल वत्साकृति भुजा करभ मंडल सूकर एनत्समस्ततुल्य मूत्र होनेसे चिकित्सकद्वारा असाध्य लक्ष्य होताहै चतुःपथ त्रिपथ द्विपथ और एकपथ एतादृश मूत्र होनेसे मृत्यु होती है यथा शस्त्र खड्ग धनुष दण्ड वज्र शूल मुसल एवं लगुडाकार एतादृश

होनेसेमृत्युहोतीहै ॥४॥४३॥४४॥

हंसकारण्डसम्पूर्णतडागंदृश्यतेयदा॥ पद्मरूपंफला कारंतैलमात्रेप्रजायते॥सर्वेदासकलंगात्रंप्रासादंगजचचा मरं॥छत्रंचतोरणंचैवतैलविन्दुश्चिरायुषं॥४५॥४६॥

हंसऔरकारण्डअर्थात् बत्तक एवं तडागतुल्य तथा पद्माकारऔरफ लाकारएतादृशतैलबिन्दुहोनेसे एवं सर्व्वकालमेंशरीरगृहगजचचा मरछत्रतोरण एतादृशतैलविन्दुहोनेसेमनुष्य चिरायुहोनेहैं॥४५॥४६

तैलबिन्दुर्यदामूत्रेचालनिछिद्रसन्निभः॥शाकिन्या गोत्रदेव्याश्चद्वयोर्दोषसमुद्भवः॥मूत्रमध्येयदातैलं पुरुषाकारश्चदृश्यते॥गृहदोषश्चदेव्याश्चविज्ञानी याद्विचक्षणः॥मूत्रमध्येयदातैलंमण्डलंवधयेत्ध्रुवं॥ निर्दोषश्चततोज्ञात्वाऔषधंचैवकारयेत्॥४७॥४८॥४९॥

मूत्रमेंतैलविन्दु चालनीकेछिद्रसदृशहोयतदा शाकिनी एवं गो त्रदेवी एही द्वयकेदोषसेरोगोत्पत्तिहोताहै तथा मूत्रमे तैल निसे पद्वारा पुरुषाकार दर्शन होनेसेगृह एवंदेवीकेदोषसे रोग होता है- तथा मूत्रमे तैल बिन्दु मण्डलाकारदर्शन होय तदा निर्दोषज्ञानकर्के औषधीकरनाचाहिये॥४७॥४८॥४९॥

तैलबिन्दुर्यदामूत्रेत्रिकोणाङ्कःप्रजायते॥शाकिन्या गो त्रदेव्याश्चद्वाभ्यांदोषसमुद्भवः॥तैल बिन्दुर्यदामूत्रे चालिनीसदृशोभवेत्॥प्रेतव्यंतरयोर्दोषंध्रुवंज्ञेयंचि कित्सकैः॥तैलबिन्दुर्यदामूत्रंनराकारंप्रजायते॥गृह दोषश्चदेव्याश्चविचार्य्योऽयंविचक्षणैः॥५०॥५१॥५२॥

मूत्रमेतैलबिन्दुत्रिकोणाङ्कतुल्यहोनेसेशाकिनीऔरगोत्रदेवी एहीद्वय सेदोषउत्पन्नहोताहै तैलविन्दुचालनीसदृशहोनेसे प्रेतजनितदोष ए वंनराकारहोनेसेगृहऔरदेवीकर्कैदोषविचार्य्यहै॥५०॥५१॥५२॥

तैलविन्दुर्यदामूत्रेमंडपंवद्दृश्येत्ततः॥निर्दोष श्चततोज्ञात्वाभेषजंतन्नकारयेत्॥पूर्व्वस्यां वर्द्धतेतैलबिन्दूनांप्रसरोयदि॥ आरोग्यता +

तदानूनंरोगीनैवायुर्योस्तुधि॥५३॥५४॥
मूत्रमेतैलविन्दु निक्षेपद्वारा मंडप सदृशदर्शनहोनेसेनिर्दोषज्ञानक कैं औषधीनकरै एवंपूर्वदिशामे तैलवर्द्धन होनेसे औरतैलविन्दु प्रसारहोनेसे आरोग्यता और आयुवृद्धिनिश्चयहोतीहै॥५३॥५४॥

दक्षिणस्यांयदाज्ञेयंतैलबिन्दुः प्रसर्प्यति॥ किंयद्विबी सरेस्तस्यमृत्युरेवनसंशयः॥ कौवेरींवारुणीं चैवतैल विन्दुः प्रसर्प्यति॥ आरोग्यंचतदानूनंपुरस्यापि प्र- जायते॥ ईशान्यांतैलविन्दूनांप्रसरोयदिजायते॥ सजी वेन्मासमेकन्तुपश्चाद्यातियमालयम्॥५५॥५६॥५७॥

दक्षिणदिक्मेतैलप्रसारहोनेसे अल्पवासरमे मृत्यु कहना चाहिये उत्तर तथापश्चिमदिक्मेप्रसारहोनेसे आरोग्य तथाईशानदिक्मे प्रसा रहोनेसेएकमासकेपश्चात् रोगी यमालयगमनकरताहै॥५५॥५६॥५७

प्रसारोयदितैलस्यनैऋत्यांदिशिमाश्रितः॥ सच्छिद्रञ्च भ वेन्मूत्रंतस्यमृत्युर्नसंशयः॥ वायव्यांदिशिमाश्रित्यतैलस्य प्रसरोभवेत्॥ सरोगीयमगेहेचशीघ्रंकोशंकरोतिसः॥५८॥५९

नैऋत्यदिक्मे तैलविन्दु प्रसारणकरनेसे एवंमूत्रसच्छिद्र दर्शन होनेसेमृत्युहोतीहै एवं वायव्य दिक्मे प्रसारहोनेसे रोगी का यमालयमे शीघ्रवासहोताहै॥५८॥५९॥

अथकालज्ञानविवरणंव्याख्यास्यामः॥

कालज्ञानंकालयुक्तंशम्भुनायत्रभाषितम्॥ मा सैःषड्भिरथाऽग्रेकैर्ज्ञायतेमरणंनृणाम्॥ कालस्तु त्रिविधोज्ञेयस्त्वतीतोनागतस्तथा॥ वर्त्तमानस्तृती योन्यस्तंवक्ष्ये शृणुपुत्रक॥ कालःकलयतेविश्वं- कालश्चसृजतिप्रजाः॥ कालःकलयतेलोकान् तेनकालोविधीयते॥६०॥६१॥६२॥ ॥ ॥

अनन्तरकालज्ञानविवरणकहतेहैं कालयुक्तकालज्ञान शिवद्वा राउक्तभया जिसकालज्ञानविषयमे मनुष्योंकाषट्मासमरणावधिशे षरहनेसे मृत्युज्ञानहोताहै सोकाल त्रिप्रकारहै हेपुत्र श्रवण करो

यथा भूतकाल अर्थात् गतकाल एवं वर्तमान अर्थात् उपस्थितका
ल और भविष्यत् अर्थात् भावीकाल सोई कालसे विश्वका स्थिति
पालन एवं संहार होता है अतएव कालनामविधान हुआ॥ ६०॥ ६१॥ ६२

अथ कालप्रशंसा

कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः॥ कालः स्व
पिति जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः॥ काले देवा विनश्यं
ति काले चासुरपन्नगाः॥ नरेन्द्रा जन्तवः सर्व्वे सर्व्वे का
ले च नश्यति॥ कालो हि भगवान् विष्णुः स्वयं कालो म
हेश्वरः॥ ब्रह्मापि कालरूपी च वर्त्तते कालसंज्ञया॥ ६३॥

कालसे समस्त भूतौंका पालन एवं संहार होता है और सोई काल
शयन एवं जागरण करते हैं सो अति पराक्रमयुक्त है एवं कालमान्न हो
नेसे देवता असुर मनुष्य तथा यावज्जीवका नाश होता है किन्तु विष्णु
भगवान् शिव ब्रह्मा एतत् सर्व काल ज्ञान द्वारा वर्त्तमान हैं॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥

काले च फलते वृक्षः काले धान्यं प्रजायते॥ काले च द्र
वते नारी सोऽपि कालो विधीयते॥ कालेन कृष्णः पिङ्गासो
न कालो महिषासनः॥ चन्द्रादित्यो स्वरेणैव सोऽपि कालो वि
धीयते॥ विरंचिदिनमध्येतु पतंती द्वाश्च तु द्दश॥ सचादि
सति मानेषु सोऽपि काले विनश्यति॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥

पुनः कालमे वृक्ष फलयुक्त एवं धान्य प्राप्ति तथा स्त्रियोंका रजोदर्शन इत्यादि
सर्व्व सम्भव होता है एवं कालसे कृष्ण पीत वर्ण होता है एवं ब्रह्माके एक दि
नमे चतुर्दश इंद्र पतन होते हैं एवं ब्रह्मा का नाश काल प्राप्त होने से होता है। ६६
६७। ६८

मानुषः शतजीवी च पुरा वेदेषु भाषितं॥ विकृ
र्म्मणः प्रभावेन शीघ्र काले विनश्यति॥ वर्षाग्री
नं तथा चोष्णं प्रत्यूषं मध्यमं दिनम्॥ अपरान्हे त
था रूप कालः कालेन कथ्यते॥ क्रोधलोभप्रसंगे
न कालः कलति प्राणिनां॥ ज्ञानयोगसदाभ्यासैः-
कालो रक्षति सर्व्वदा॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ॥

मनुष्योंका आयुर्बल शतवर्ष पूर्वमे वेद द्वारा उक्त हुआ पापकर्म्मप्र

भावसे स्वल्पकालमे नाशकोप्राप्तहोतेहैं तथा वर्षा शीत ग्रीष्म एवं दिवा प्रातः मध्यान्ह अपरान्ह एही समस्तकाल उक्त हुआ - क्रोध एवं लोभ प्रसंग द्वारा काल प्राणियोंका नाशकर्त्ता एवं ज्ञान योगाभ्यासद्वारा रक्षिता होताहे ॥ ६९॥७०॥७१॥ * ॥ ॥

कालेपानीयमशनंकालेबीजन्तुवापयेत्॥कालेक
र्म्मसमुद्दिष्टंविपरीतेविपर्य्ययः॥नाकालेम्रियतेक
श्चिन्नास्तिजीवत्यकालजः॥योयस्मिन्म्रियतेकश्चि
द्विद्धःशरशतैरपि॥कालप्राप्तस्यकौंतेयवज्रायन्तेतृ
णान्यपि॥एकोत्तरंमृत्युशतंब्रुवतेवेदवेदिनः॥तत्रै
कःकालसंयुक्तःशेषास्त्वागंतवःस्मृता॥७२॥७३॥७४॥

कालमेजलपान एवं अन्न भोजन बीज वापन कर्म्मोद्देश होताहे एवं विपरीतमे विपर्य्ययकाल प्राप्त भावसे प्राणियोंका मृत्यु एवं जन्म नहीं होता अकालमे शतवाण वेधद्वारा मृत्युनहींहोती एवं कालप्राप्तभावसे तृण वज्रतुल्यहोताहे एकोत्तरशतवर्षमृत्युकालवेदवादीद्वारा उक्त हुआतत्र एककालसंयुक्त एवंशेषआगन्तुककाल॥७२॥७३॥७४॥

यथावर्षाप्यकालेषुयथापुष्पंयथाफलम्॥य
थास्याद्दीपनिर्वापमकालेमरणंतथा॥जलम
ग्निंविषंशस्त्रंस्त्रियोराजकुलानिच॥अकालमृ
त्यवोह्येतेतेभ्योबिभ्यंतिपण्डिताः॥७५॥७६॥

यादृश अकालमेवृष्टि एवं पुष्प फल औरदीप निर्व्वापनहोताहे तादृश जलअग्निविषशस्त्र स्त्री राजकुल एही समस्तसे अकालमृत्युकथितभया औरइत्यादि अकालमृत्युस्थानसे पण्डितजनत्रासितहोतेहैं॥७५॥७६

अस्तमेतियथावाताद्दीपस्तैलादिसंयुतः॥नि
र्वातरक्षणाद्दीप्तस्तथैवागन्तुमृत्युभिः॥येचा-
प्यागन्तवःप्रोक्तास्तेप्रशाम्यंतिभेषजैः॥विविधै
र्मंत्रमांगल्यैःकालमृत्युःप्रशाम्यति॥नायुधै
र्विषविप्राद्यैर्नौषधैरात्तमन्त्रिणो॥उपक्रमेयंन
भवेदकालमरणंयदि॥७७॥७८॥७९॥ ७॥

यादृश तैलपूर्णदीप अस्तगत होता है तादृश वायुरसा रहित होनेसे प्राणियोंका मृत्यु होती है एही आगन्तुक मृत्यु कथित हुआ तत्र भेषज एवं विविध प्रकार मंत्र तंत्र मंगलाचरणसे शान्ति होता है एवं मृत्युकाल प्राप्त होनेसे अश्विनीकुमारके अस्त्र एवं औषधी तथा ब्राह्मणके मंत्रसे मृत्यु निवृत्त नहीं होती ॥७७॥७८॥७९॥ ८०॥

अथ शरीररक्षणोपदेशः

सर्व्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत् ॥ तदभावे हि भावानां सर्व्वभावः शरीरिणां ॥ नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी सदा ॥ स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवेत् ॥ हितमभ्यस्यतः पुंसो नाकाले कालदृष्टिना ॥ संज्ञायते परामर्शो बलोत्साहेन्द्रियायुषम् ॥८०॥८१॥८२

मनुष्य अन्य समस्त कार्य्य परित्याग करके शरीर पालन करें यद्धेतुक शरीर भावसे शुभ एवं अशुभ भाव समस्त का अभाव होता है यादृश नगरवासी नगर पालन एवं रथी रथ पालन करते हैं तादृश बुद्धिमान मनुष्य शरीरके कार्य्य मे हितकर होते हैं एवं शरीर रहिताभ्यस्त पुरुषके अकालमे कालदृष्टि द्वारा पराक्रम उत्साह इन्द्रिय आयु बल इत्यादिका ज्ञान होता है ॥८०॥८१॥८२॥

अहितानि च संत्यज्य दोषमप्याप्नुयादपि ॥ तथाप्यानृणमायाति साधूनां सात्म्यवान्यपि ॥ हिताहारविहाराणां सदाचारनिषेविणां ॥ लोकद्वयमपेक्षाणां जीवितममृतायते ॥ विदुषान्तः शरीरस्थान् नित्यं सन्निहितानरीन् ॥ जित्वा वर्ज्यानिवर्ज्यानि चिरंजीवितुमिच्छता ॥८३॥८४॥८५।

हित आहार एवं विहार तथा सदाचारावलोकन द्वय अपेक्षा युक्त पुरुषका जीवित अमृततुल्य होता है एवं चिरंजीवी होनेकी इच्छा करके पंडितजन नित्य सन्निहित शत्रुको विजय करके स्थित रहते हैं ॥८३॥८४॥८५॥

कालाग्निर्जठरे याति तस्य वाञ्छा चतुर्विधा ॥ आहारउदकं निद्रा कामं चैव चतुर्थकम् ॥ अन्नहीनाद्दहेद्धातुमम्बुहीनाच्च शोणितं ॥ कामहीनाद्दहेच्चसु

रनिद्रारोगकारिणी॥८६॥८७॥ छ॥

कालाग्निकेजठरमे प्राप्तहोनेसे चतुःप्रकारगन्छा होती है यथा-आहारजल निद्रा काम तन्मध्ये अन्न प्राप्तनहोनेसे धातुनाश होताहै और जलाभावहोनेसे रक्तशुष्क एवंकामाभावसे नेत्रक्षय प्राप्त एवंनिद्राभावसे रोगप्राप्तहोताहै॥८६॥८७॥

अथम्रियमाणलक्षणम्

आत्माशरीरंश्रुत्युक्तमंतरात्मामनोभवेत्॥पर
मात्माभवेत्प्राणःपञ्चतत्वानिधारयेत्॥वर्णहीनं
यदात्मानं पश्यत्यात्माकथञ्चन॥नासौजीवतिलो
केस्मिन्कालेनैवावलोकितः॥८८॥८९॥ छ॥

श्रुतिद्वारा उक्त हुआ शरीरका आत्मा संज्ञा मन अन्तरात्मा एवं-प्राण परमात्मासोई प्राणपञ्चतत्वकोधारणकरतेहैं यदि आत्मामनद्वारा विकृत दर्शनप्राप्त होय तो मनुष्यलोकमे जीवित नहीं रहते कालावलोकनसे उक्त हुआ॥८८॥८९॥

अथपाक्षिकमृत्युलक्षणम्॥

प्रकृतिस्थःसदाजीवे द्विकृतिश्चैवगच्छति॥स
चवैकालदृष्टस्तुम्रियतेज्योतिवर्जितः॥ सम्पू-
र्णोवहतेसूर्य्यःसोमश्चैवनदृश्यते॥पक्षेनजा
यतेमृत्युःकालज्ञानेनभाषितम्॥९०॥९१॥

प्रकृतिस्थजीवविकृतिप्राप्तहोनेसेकालदृष्टज्योतिवर्जितहोतेहैं अर्थात् सूर्य्यसम्पूर्णदर्शनहोय एवंचन्द्रमादर्शनरहितहोयतो पंचदशदिवसमेसोईमनुष्य मृत्युप्राप्तहोतेहैं कालज्ञानद्वाराउक्तहुआ॥९०॥९१॥

यस्यवस्त्रेस्वरेगन्धोवागात्राननयोरपि॥न
स्यार्द्धमासिकंज्ञेयंयोगिनांदेविजीवनम्॥९२॥

हेदेवी जिन्केवस्त्रमेकंठस्वरमे गात्रमे एवंमुखादिमेगन्धहोयसोव्यक्ति योगीहोनेसे भी अर्द्धमासपर्य्यंतजीवितरहके मृत्युप्राप्तहोतेहैं॥९२॥

मासेन षड्भिर्मासैश्चपक्षेणैवत्रिमासिकम्॥पञ्च
रात्रेणमासैकं मृत्योश्चैवहिलक्षणम्॥उदयःसूर्य्ये

मार्गेण चन्द्रेणास्तं गतं यदि ॥ ददाति शुभसंघातं तं वि [१४॥]
परीते विपर्य्ययः ॥ चन्द्रोदये यदा सूर्य्यः चन्द्रः सूर्योद
ये तथा ॥ अशुभं हानिरुद्वेगः शुभं सर्व्वं निजोदये ॥ ९३
षाण्मासिक मासिक पाक्षिक त्रैमासिक पञ्च मासिक एवं पञ्च
रात्रिक एही समस्त मृत्यु के लक्षण हैं और सूर्य्य मार्ग से उदय
एवं चन्द्र मार्ग से यदि अस्त प्राप्ति हो य तदा समस्त शुभ होता है
एवं चन्द्रोदय मे सूर्य्य सूर्य्योदय मे चन्द्रमा उदय हों य तदा अशु
भ हानि उद्वेग एवं निजोदय मे शुभ प्राप्ति होती है ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

अथ सूर्य्य चन्द्र स्वर लक्षणम्

शुक्लपक्षे भवेद्वामा कृष्णपक्षे च दक्षिणा ॥ उभयोस्त्रिदि
नान्याहुर्दृश्यते चन्द्रसूर्य्ययोः ॥ पंचभूतात्मको दीपः श
शिस्नेहेन संयुतः ॥ वातस्य रक्षिता सूर्य्यस्तेन जीव स्थि
रो भवेत् ॥ आत्मा दीपशिखा तेन आयुः स्नेहकला मतः ॥
कालः कज्जलसंभारो वर्त्तिरेषा तनु स्मृता ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८
सूर्य्य एवं चन्द्रमा का क्रम शुक्ल पक्ष मे वामा एवं कृष्ण पक्ष मे दक्षि
णा अथवा पक्षद्वय मे सोई त्रिदिवस आचार्य्यों करके उक्त हुआ सो
दर्शन होता है पञ्चभूतात्मा दीप शशिरूप तैलयुक्त वात रक्षिता
सूर्य्य एतद्द्वारा जीव स्थिर होते हैं आत्मा दीपशिखा है एवं आयु
र्वल स्नेहकला है और कालकज्जल संभार अर्थात् धूम शरीर वर्त्ति
का है सो कथित हुआ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अथ मानस लक्षणम्

शब्दे स्पर्शे तथा घ्राणे स्वादे रूपे तथैव च ॥ मनश्च हरते
यत्र रहमानस उच्यते ॥ तीर्थस्नाने गुरौ देवे ध्याने दाने त
पस्सु च ॥ मनश्च हरते यत्र कर्त्ता मानस उच्यते ॥ काया
भवन मध्ये च शान्तिः कर्माणि कारणम् ॥ मनश्च हरते
येन रहमानस उच्यते ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥ ॥ ॥
शब्द स्पर्श घ्राण स्वाद रूप इन्हे मन हरण करने से रहमानस अर्थात् वि
वित्त उक्त हुआ तीर्थस्नान गुरु देव ध्यान दान तप एही सम्पूर्ण हरण कर

नेसेकर्त्तामानसउक्तहुआएवंकायाभवनविशेषान्तिकर्म्ममेकारणएत
द्वारामनहरणकरनेसेरहमानसउक्तहुआ॥९९॥१००॥ ५१॥ ॥

अथप्राणसंख्याप्रमाणानि

एकविंशतिसहस्राणिशतानिषट्तथैवच॥ निशाहेच
लतःप्राणाःसचकालेविनश्यति॥ कायाभवनमध्येच
मारुतोरक्षपालकः॥प्रवेशेदशभिःप्रोक्तोद्वादशाङ्गुल
निर्गमे॥मनश्चैवस्थिरंकुर्य्यात्मनसामारुतस्थिरः॥मा
रुतेनस्थिरंतेजःकालःसहस्यतेतदा॥१०२॥१०३॥१०४॥

रात्रीएवंदिवसमेषट्शतोत्तरएकविंशतिसहस्र २१६०६ स्वासाशरीर
मेचलतेहैं सोकालप्राप्तहोनेसेनाशप्राप्तहोतेहैं शरीररूपगृहका पवन
रक्षपालकसोप्रवेशावस्थामेदशाङ्गुलप्रमाण और निर्गमनावस्थामे
द्वादशांगुलप्रमाणहोताहै एवंमनस्थिरकरकेतद्वारापवनएवंवात
सेअग्निस्थिरकरनेसेकालदृश्यहोताहै॥१०२॥१०३॥१०४॥ ॥

अथवातादिस्वरलक्षणम्

वातःपित्तंकफश्चैवज्ञायतेधातुदर्शनात्॥ भेदाभेदनिबं
धेनकालज्ञानेसदाध्रुवं॥गम्भीरश्चभवेत्श्लेष्मास्फुटव
क्ताचपित्तलः॥उभाभ्यांहीनतोवातस्तेषाञ्चस्वरलक्ष
णम्॥त्वरिताङ्गोभवेत्पित्तेवातेचैवतुमंदता॥स्थिरगा
मीभवेच्छ्लेष्माग तेरेतच्चचेष्टितम्॥१०५॥१०६॥१०७

भेदाभेदयुक्तकालज्ञानविषयमेवातपित्तकफएतत्समस्तकेधातु
दर्शनसेसर्वदानिश्चितज्ञानहोताहै श्लेष्मायुक्तमनुष्यगंभीरस्वर ए
वंपित्तयुक्तकास्फुटऔरवातविशिष्टकासमस्वरअर्थात् उभयमिलि
तस्फुटमंदस्वरयुक्तलक्षणहोताहै एवंपित्तमेत्वरितागति औरवातमे
मन्दाएवंकफमेस्थिरागतिचेष्टाहोतीहै॥१०५॥१०६॥१०७॥ ॥

अथवातादिप्रकृतिदेहलक्षणम्

पित्तरोगीभवेदुष्णोवातरोगीचशीतलः॥श्लेष्मरोगी
तथार्द्रश्चदेहस्तस्यैवलक्षणम्॥आदौचजायतेरोगः
साध्योऽसाध्यस्तथैवच॥सकलेनिष्फलश्चापिजीवितं

मरणं ध्रुवं॥सकलं कालहीनं च निष्फलं कालसंयुतम्॥
इंद्रियाणां विकारैश्च ज्ञायते मृत्युजीवितं॥१०८॥१०९॥११०

पित्तरोगी का देह ऊष्ण एवं वातरोगी का शीतल श्लेष्मरोगी का आर्द्र एही समस्त चेष्टा देह का होती है प्रथम साध्य एवं असाध्य रोग होता है सो कालज्ञान विना जीवन का ध्रुव मरण कर्त्ता होता है कालज्ञानहीन सकल निष्फल एवं कालज्ञानयुक्त इन्द्रियों के विकार से जीवन एवं मृत्युज्ञान होता है॥१०८॥१०९॥११०॥

अथ रोगनिवृत्तिलक्षणम्

पाणिपादौ भवेद्दुष्टौ दीर्घस्वल्पस्तथैव च॥जिह्वा
कोमलतां याति स रोगी न विनश्यति॥स्वेदहीनो
ज्वरो यस्य नासाश्वासः प्रवर्त्तते॥कण्ठोऽपि
कफहीनस्तु स रोगी जीवति ध्रुवम्॥१११॥११२॥

पाणि एवं पाद दुष्ट होके दीर्घ अथवा ह्रस्व और जिह्वा कोमलता प्राप्त होय एतादृश रोगी का विनाश नहीं होता एवं जिस पुरुष का स्वेदहीन ज्वर एवं स्वास नासिका मार्ग से प्रवृत्त होय एवं कण्ठ कफ से हीन होय सो ई मनुष्य का ध्रुव जीवन होता है॥१११॥११२॥ ॥

निद्रा सौख्यं भवेद्यस्य शरीरः सोद्यमस्तथा॥इ
न्द्रियाणि प्रसन्नानि स रोगी न विनश्यति॥चैत
न्यं सकलं यस्य गंधस्वादं स्फुटं भवेत्॥कलापू
रितकण्ठस्तु स जीवेन्नात्र संशयः॥१३॥१४॥

निद्रा एवं सौख्य और शरीर उद्यमयुक्त सर्व्व इन्द्रिय प्रसन्नतायुक्त होने से रोगी का जीवन होता है एवं सर्व्व इन्द्रिय चैतन्य द्वारा गंध स्वाद का स्पष्ट ज्ञान होता है कण्ठ से स्फुट वचन उच्चारण होने से रोगी का जीवन होता है अत्र संशय नहीं॥११३॥११४॥ ५ ॥

अथासाध्यलक्षणम्॥

अनिलो याति पित्तस्य पित्तं याति कफगृहे॥कफ
श्च कण्ठमायाति दुर्लभं तस्य जीवितम्॥रात्रौ
दाहं भवेद्यस्य दिवा शीतं च जायते॥कफपूरित

कण्ठस्तु तस्य मृत्युर्भवेद्ध्रुवम्॥ हीनस्वरो भ्रष्टगु
दः कासस्वाससमाकुलः॥ हिक्काशोषसमायुक्तः
कुक्षशूली न जीवति॥११५॥११६॥११७॥ ॥

वातपित्तस्थानमे एवं पित्तकफस्थानमे और कफ कण्ठस्थानमे प्राप्त होनेसे मनुष्यका मृत्यु होती है जिस मनुष्यको रात्रिमे दाह एवं दिवा मे शीत प्राप्त होय और कफ कण्ठ प्राप्त होय तदा ध्रुव करके मृत्यु होती है एवं हीनस्वर और गुदभ्रष्ट कासस्वास हिक्का शोष कुक्षशूल एतत्स मस्त रोगविशिष्ट होनेसे मनुष्यका मृत्यु होती है॥११५॥११६॥११७॥

हृदयञ्चैव तथा नासा पादौ पाणी च शीतलौ॥ शिरस्ता
पो भवेद्यस्य तस्य मृत्युर्भवेद्ध्रुवम्॥ धूम्राभमरुणश्या
व हरितं नीलपीतकम्॥ ष्ठीवति श्वासकाशार्तो न जीव
तिहतस्वरः॥ अङ्गकंपो गतेर्भङ्गो वर्णभ्रंशस्तथैव च॥ गं
धस्वादं न जानाति स गच्छेद्यमशासने॥११८॥११९॥१२०॥

हृदय नासा हस्त पाद दिशीतल और शिर तप्त होनेसे मृत्यु होती है एवं धूम्राभ अरुण श्याव हरित नील पीत एतादृश कफ का स्वरूप का श स्वासयुक्त मनुष्यको ष्ठीवन् अर्थात् मुखसे श्लेष्मादि वमन होने से मृत्यु होती है और कम्पयुक्त अङ्ग एवं गति भङ्ग और वर्णभ्रंश गंध एवं स्वादका ज्ञानाभाव होनेसे मृत्यु होती है॥११८॥११९॥१२०॥

शिरःस्वेदो भवेद्यस्य मुखे स्वासः प्रवर्त्तते॥ अष्ट
नाडी अनिर्बाहं सोऽपि कालेन वीक्षितः॥ अरुंध
तीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि पदानि च॥ आयुर्हीना
न पश्यंति चतुर्थं मातृमण्डलं॥ अरुंधती भवेज्जि
ह्वा ध्रुवो नासाग्रमेव च॥ भ्रुवो विष्णुपदा विद्यात्ता
रिको मातृमण्डलम्॥१२१॥१२२॥१२३॥ ॥

मस्तक स्वेदयुक्त मुखद्वारा श्वासका प्रवृत्ति एवं अष्टनाडी अनिर्वहन शील होनेसे मृत्यु होती है अरुंधती तारा एवं ध्रुव और विष्णु त्रिपद मातृमण्डल एही चतुरताराका आयुहीन मनुष्योंको दर्शन नहीं होता प्रकारान्तरसे अरुंधती जिह्वा और ध्रुव नासाग्र विष्णुत्रिपदी भ्रुवद्व

य.मातृ मण्डल तालुदेशको कहते हैं ॥१२१॥१२२॥१२३॥ ॥

मतिभ्रंशोतस्खलेत्तु वाणी धनुरंध्रंनवीक्ष्यते ॥ रात्रौ चन्द्र सूर्यं वापि रात्रौ चन्द्र दिवाकरौ ॥ दिवाता तारका चन्द्रं रात्रौ व्योम्नि वितारकम् ॥ युगपच्च चतुर्दिक्षु शक्रकोदण्ड मण्डलं ॥ भूधरो भूधराग्रो वा गन्धर्वनगरालयं ॥ दिवानिशि चन्द्र शम्भुरेते पञ्चत्वहेतवः ॥१२४॥१२५॥१२६॥

मनका भ्रम होके जिन्का वाक्य स्खलित होना है एवं धनुरंध्र अर्थात धनुष्का छिद्र दृष्ट नहीं होता एवं निशामे सूर्य चन्द्र अथवा चन्द्र-सूर्य्य और दिवामे नक्षत्र सहित चन्द्र रात्रि समय आकाशमे नक्षत्र हीन एवं एककालमे चतुर्दिक् मे इन्द्रधनुष मण्डलसदृश एवं पर्व्वत और पर्व्वताग्र गन्धर्व गणका नगरालय और दिवामे चन्द्र रात्रिमे शम्भु का आकृति एही समुदाय दर्शन पञ्चत्व का हेतु ॥१२४॥ १२५॥१२६॥

अथ नक्षत्रलग्नतिथिवारै रसाध्यलक्षणम् ॥

अहिर्बुध्न्येतिष्य संज्ञेः र्य्यमर्क्षे प्राजापत्यादित्ययोः स्सप्तरात्रात् ॥ रोगोत्पत्तिर्ज्ञायते मानवानां निस्संदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥ नन्दाच वृश्चिके मेषे भद्रा मिथुनकन्ययोः ॥ कर्केचैव जया सिंहे कुंभे रिक्ता तुले वृषे ॥ धने युग्मे च मकरे पूर्णा तिथिरुदाहृता ॥ विरुद्धो रोगिणां नूनं नन्दादि स्थितिपञ्चकः ॥ भौमकृत्तिकयोर्नन्दा भद्रा च बुधनागयोः ॥ जया गुरौ मघायाञ्च रिक्ता भृगुकधनिष्ठयोः ॥ भरण्यां शनिवारे च पूर्णा च तिथि पञ्चके ॥ योगे स्मिन्व्याधिरुत्पन्ने न सिध्यति कदाचन ॥१२७॥१२८॥१२९॥१३०॥१३१॥१३२॥

मनुष्योंके उत्तरभाद्रपद पुष्य उत्तर फाल्गुनी रोहिणी पुनर्वसु एतन्नक्षत्रमे रोगोत्पत्ति होनेसे सप्तवासरमे रोगसे विमुक्त होताहै तत्र संदिग्धरहित गर्ग द्वारा उक्त हुआ वृश्चिक तथा मेष लग्न नन्दा

तिथि मिथुन तथा कन्यालग्न भद्रातिथि कर्कलग्न जयातिथि कुम्भ एवं सिंहलग्न रिक्तातिथि धनलग्न भद्रातिथि मिथुनलग्न जयातिथि मकरलग्न पूर्णातिथि एही तिथि एवं लग्नमे रोगोत्पन्न होनेसे रोगीका निश्चय विरुद्ध होता है एवं मंगलवार कृत्तिकानक्षत्र नन्दातिथि बुद्धवार अश्लेषा नक्षत्र भद्रातिथि बृहस्पतिवार मघानक्षत्र जयातिथि शुक्रवार धनिष्ठानक्षत्र रिक्तातिथि शनिवार भरणी नक्षत्र पूर्णातिथि ए समस्त योगमे रोगोत्पत्ति होनेसे रोग असाध्य होता है ॥१२७॥१२८॥

अथ दूतलक्षणम् ॥

आतुरोपक्रमार्थी च दूतो याति भिषग्गृहे ॥ तस्य परीक्षणं कार्य्यं येन संलक्ष्यते गदाः ॥१३३॥ एको वा गच्छते दूतो गृहीत्वा वंशयष्टिकां ॥ मरणं तस्य जानीयाद्दिवसे सप्तमे तथा ॥१३४॥ एको वा गच्छते दूतो ब्रवीति च पुनः पुनः ॥ लिखितं मरणं तस्य यामे केन च निश्चितं ॥१३५॥ द्वौ त्रयश्चैव चत्वारः स्त्री बालवृद्धषण्डकाः दुष्टवाक्यप्रवक्तारो रक्षाग्नियमदिक्स्थिताः ॥१३६॥ शस्त्रास्त्रपाणिधारिणो भस्मपाषाणास्थिसमाश्रिताः ॥ एवं नगच्छेत्तु भिषक् यशः प्राप्तिर्न विद्यते ॥१३७॥ ॥

आतुरोपक्रमार्थी अर्थात् आतुरका चिकित्सार्थी दूत वैद्यगृहमे गमन करै सोई दूतका परीक्षा करनेसे रोग लक्षित होता है सो कहते हैं एक दूत वंश लगुड ग्रहण कर्के वैद्यसमीपमे गमन करनेसे सप्तमदिवसमे आतुरकी मृत्यु होती है एवं एक दूत वैद्यसमीप होके बारम्बार भाषण करै तदा एक प्रहरमे निश्चय मृत्यु होय द्वय २ अथवा त्रय ३ किम्वा चत्वारः ४ स्त्री बालक और वृद्ध तथा नपुंसक दक्षिण वा अग्नि अथवा नैऋत्य दिक्मो स्थित होके दुष्टभाषण करै और शस्त्र अस्त्र एवं भस्मधारी पाषाण और अस्थि समाश्रित एतत्समस्त दर्शन होय तदा वैद्य यशाभाव ज्ञान करके गमन न करै ॥१३३॥ ॥१३४॥१३५॥१३६॥१३७॥

षंडांधमूढबधिरंरुजपीडितंवाबालं स्त्रियंचवि कलंत्रिषितंचदीनं॥ श्रांतंक्षुधातुरमपि भ्रमितंच जीर्णंदूतंनशस्तमपिवेदविदोवदन्ति॥१३५॥ अ ग्रभागेपिचायुष्यंकष्टंपृष्ठविभागतः॥ वामेचशि रसःपीडामृत्युर्भवतिदक्षिणे॥१३६॥ खरोष्ट्रमहि षारूढःप्लुतगद्गदरुक्षवाक्॥ पाखण्डीस्त्रीचरो गार्तोनशस्तोदूतकर्म्मणि॥१३७॥ नपुंसकस्त्रीव हवश्चनग्नाःपाशायुधाःपाणिवृषाणिनोवा॥ सि तेतरैश्चापिपटैर्वृताङ्गाःस्निग्धार्द्रदेहास्तृणखंडि नश्च॥१३८॥ सन्यासिनःपाणिविमर्द्दकाश्च घ्राण स्पृशःप्रस्तरभेदिनश्च॥ नखद्विजोष्ठाङ्गकघर्ष- शीलाःशोकाकुलाश्चापिगदाभिभूताः॥१३९॥

नपुंसक अंध मूर्ख बधिर रोगी बालक स्त्री विकलतषा युक्त खेद विशिष्ट क्षुधातुर मत्त जीर्ण देह एतत्समस्त दूतकर्म्ममे प्रशस्त नहीं है सो वेदद्वारा उक्त हुआ वैद्यके अग्रभागमे स्थित होके कुश लउच्चारण करैतो आयुवृद्धि एवं पृष्टभागमे कष्ट वामभागमे शिर पीडा दक्षिणभागद्वारा मृत्यु खर उष्ट्र महिष इन्केऊपर आरूढ आर्द्र गद्गद दुष्टवचनयुक्त पाषण्डी स्त्री रोगार्त्त ये दूतकर्म्ममे शुभ नहीहै नपुंसकस्त्रीसमूह एवं नग्नरहै पाशादियुक्त अर्थात् फां सी शृङ्ग युक्त सितसे इतरवस्त्र अर्थात् स्वेत वस्त्र विहीन आ- च्छादित स्निग्ध एवं आर्द्र देह त्रिणषण्डी संन्यासी करमर्द्दनशी ल घ्राणेन्द्रियस्पर्शशील प्रस्तरभेदी नखदन्त अर्द्धाङ्ग घर्षण- शील शोकाकुल गदाभिभूत अर्थात् पीडित।३५।३६।३७।३८।३९

चर्म्मादिहस्तापरिषेककाले तथैवभोज्यस्यनिशा सुचापि॥ पृष्टप्रदेशेदिशिचापियाम्या मत्युच्चभागे भिषजांविशेषात्॥१४०॥ दूताःसमायान्तिनिरर्थमे ते विपर्य्ययाव्याधितप्रश्नतोवा॥ वैद्यस्यगेहेनहित स्यदृष्टाजीवस्थितिर्ज्ञानिभिरत्रमुख्यैः॥१४१॥ आ

द्रीम्लेषामघामूलज्येष्ठासुभरणीषुच ॥ उपसर्प्पं
तियेवैद्यंदूतास्तेचापिगर्हिताः ॥ १४२ ॥ शुक्लाम्बरा
फलकरा दूताश्च प्रियवादिनः ॥ अद्वितीयाश्च
भक्ताश्चवैद्याह्वानेप्रपूजिताः ॥ १४३ ॥ * ॥ ॥

हस्तमेचर्म्मविशिष्ट एवं परिषेककाल और भोजनकाल तथा रात्रि समयमे वैद्यके पृष्ठ प्रदेश एवं दक्षिण दिशामे स्थित होके और ऊर्द्ध्व भागमे स्थित होके प्रश्न करै एतादृशदूतके आगमन से अर्थ प्राप्त नहीं होत्ता एवं आतुरके प्रश्नसे विपरीत भाव होता है वैद्य के गृहमे एतादृशदूतप्राप्त होनेसे ज्ञानी मुख्य द्वारा सोई रोगी का कल्याण नहीं होता आर्द्रा आश्लेषा मघा मूल ज्येष्ठा भरणी एही नक्षत्र मे जो वैद्यके आह्वानमे गमन करते हैं सो निन्दित होते हैं शुक्लवस्त्र आच्छादित करमे फलयुक्त प्रियवादी अद्वितीय भक्त एतादृशदूत वैद्य के आह्वानमे गमन करने से पूजित होते हैं ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥

अथ वैद्योत्तमशकुनानि

भेरीमृदङ्गमृदुलहल्लशंखवीणावेदध्वनिर्मधुरम
ङ्गलगीतघोषाः ॥ पुत्रान्विताचयुवतीसुरभीसव
त्साधौताम्बरश्चरजकोभिमुखप्रशस्तः ॥ १४५ ॥
राजाविप्रःसुहृद्वेश्याकुमारीवरवर्णिनी ॥ दधिचन्द
नदूर्वाश्च गजाश्वसुरभीरषाः ॥ मद्यंमांसंमधुच्छ
त्रंचामरास्तदर्प्पणाः ॥ गोरोचनलतापुष्पवस्त्रालं
करणानिच ॥ १४६ ॥ रौप्यताम्रमणिस्वर्णप्रतिमागो
मयध्वजाः ॥ मृत्तिकाशस्त्रशाकानि घृतमीनप्रदीप
काः ॥ १४७ ॥ फलंवर्द्धायनंवीणापंकजानिनृपाशनं ॥
दृष्ट्वैतानिनरःकुर्य्याद्दक्षिणेनविशेषतः ॥ १४८ ॥

भेरी मृदङ्ग शंख वीणा मादल पुत्र विशिष्टा युवती वत्स युक्ता गौ वेदध्वनि मंगलगीत शब्द धौत वस्त्र विशिष्ट रजक राजा ब्राह्मण मित्र वेश्या कुमारी उत्तमास्त्री दधि चंदन दूर्वा हस्ती अश्व गौ

वृष मद्य मांस मधु छत्र चामर दर्प्पण गोरोचना लता पुष्प वस्त्र आभूषण रौप्य ताम्र मणिस्वर्ण प्रतिमा गोमय पताका मृत्तिका शङ्ख शाक घृत मत्स्य प्रज्वलित दीप पक्क फल कमल सिंहासन एतत्सम्पूर्ण वस्तु वैद्यके अग्रभागमे अथवा दक्षिणभागमे दृष्ट होनेसे समस्तकार्य्य सिद्धि होती है।।४४।।४५।।४६।।४७।।४८।।

अथ वैद्यस्य निषिद्धशकुनानि

तृणतुषफणिचर्म्माङ्गारकर्प्पासपङ्कैर्लवणगुड वसास्थिक्लीवतैलौषधाश्च ॥ रिपुविटसितधान्यं व्याधिमद्भक्ततक्रैः पतितजटिलमुण्डोन्मत्त वातैर्नसिद्धः ॥१४९॥ रजोभस्मतुषांगारगुडतैल खलोपलाः ॥ गुर्व्विणीतैलस्निग्धाङ्ग नग्नमुण्डरजस्वलाः ॥१५०॥ मुक्तकेशास्थिकर्प्पासमार्ज्जारोरगपन्नगाः ॥ रोदनंदहमानस्यवाहनस्य पलायनम् ॥१५१॥ द्वारघातोदृशासंयोविलम्बः पाणिपादयोः ॥ एतानि दुर्न्निमित्तानि वर्ज्जनीयानि सर्व्वदा ॥५२

तृण तुष सर्प्प चर्म्म अंगार कर्प्पास पंक लवण गुड चर्ब्बी अस्थि नपुंसक तैल औषध शत्रु विष्ठा कृष्ण धान्य व्याधियुक्त तक्र पतित जटिल निष्केश मस्तक उन्मत्त रज भस्म भूसी अंगार गुड तैल खल पाषाण गुर्व्विणी तैल द्वारा स्निग्धाङ्ग नग्न रजस्वला मुक्तकेश अस्थि कर्प्पास मार्ज्जार सर्प्प पन्नग रोदन पुरीषोत्सर्ग वाहनका पलायन द्वारघात अर्थात् द्वारमे हिंसादि घात नेत्रहीन पाणि पाद स्तम्भ एतत्समस्त दुर्न्निमित्त को त्याग करके वैद्यवर चिकित्सार्थ गमन करै ।।१४८।।१४९।।१५०।।१५१।।१५२।।

अथ नक्षत्रे मृत्युरोगनिवृत्योर्लक्षणम् ॥

स्वातीश्लेषारौद्रपूर्व्वासुशाक्रे रोगोत्पत्तिर्ज्जायते यस्य पुंसः ॥ तद्भेषज्यं नैव देयं कदापि ज्ञात्वा मृत्युं वैद्यराजेन पुंसा ॥१५३॥ व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्यागं जायते तस्य कृच्छ्रात् ॥

वैश्वेसौम्येरोगमुक्तिस्तुमासाद्विंशत्यास्याद्वा
सराणांमघासु ॥१५४॥ पक्षाद्धस्तेवासवेसद्वि
दैवेमूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येनवाहात् ॥१५५॥

स्वाती अश्लेषा आर्द्रा पूर्वा ज्येष्ठा एहीनक्षत्रों मे जिस मनुष्यको रोगोत्पत्ति होता है सोई मनुष्य को वैद्यत्याज्य करैं और रेवती अनुराधामे व्याधि उत्पत्ति होनेसे बहुकष्टद्वारा प्राण त्याग होता है उत्तराषाढ मृगशिरामे रोग होनेसे मास पर्य्यन्त द्वारा व्याधिसे मुक्ति होता है मघाजनित रोग विंशति २० वासर मे त्याग होता है हस्त धनिष्ठा विशाखा इत्यादि नक्षत्र मे रोगोत्पत्ति होनेसे पंचदश १५ वासरपर्य्यन्तसे रोगत्याग होता है एवं मूल अश्विनी कृत्तिका मे नव ९ वासरमे रोगत्याग होता है ॥१५३॥१५४॥ १५५॥ ॥

अथषट्त्रिद्विमासिकमृत्युलक्षणम् ॥

लक्ष्यंलक्ष्यंचिकित्सकेनमनसाशुद्धस्यभानोश्चतत्॥
क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुरःषट्त्रिद्विमासैककम्
॥१५६॥छिद्रंमध्यगतंदिनार्द्धमपिचेदायुःप्रमाणंध्रु
वं॥सर्वज्ञैःपरिभाषितंस्फुटतरंदृष्टोमहाप्रत्ययः॥५७

जिस मनुष्यों को शुद्ध सूर्य्यका दक्षिण पश्चिम उत्तर पूर्व भागक्षीण दर्शन एवं मध्यगतछिद्रदर्शन होता है सोई मनुष्यका क्रमसे षण्मास अथवा त्रिद्वि एकमास और अर्द्ध दिन आयुःप्रमाण चिकित्सक द्वारा स्पष्टज्ञातव्य है सो ज्ञानी योगियों से भाषित हुआ॥ ५६॥५७॥

अथसप्ताहेनमृत्युलक्षणम् ॥

धाराबिन्दुसमंयस्य पततेचमहीतले॥ सप्ता
हाज्जायतेमृत्युःकालज्ञानेनभाषितम्॥१५८
प्रतापेनविनिर्मुक्तःक्रुद्धभाषीनिरुद्यमः॥षण्
मासेनतुसन्देहःसगच्छेद्यमशासने॥१५९॥

जिस मनुष्यको अग्निकणावर्षाविन्दुसदृशपृथ्वीतलमे पतनहोना दर्शन होता है सोई मनुष्य की मृत्यु सप्तदिवसमे होती है कालज्ञानद्वारा उक्त हुआ और जिस मनुष्यका प्रतापहीन एवं क्रुद्धभाषण उद्यमहानि होय सोई मनुष्य षणमासमे मृत्यु प्राप्त होते हैं ॥१५६॥१५७॥*॥

वर्णहीनश्चकामेनस्वादेनैवतथैवच॥ त्रि
भिर्मासैश्च सोजीवेत्सगच्छेद्यमशासने॥
॥१५८॥ अशक्तःपाण्डुवर्णश्चबहुनिश्वाससं
युतः॥ मलञ्चपततेनित्यंमासमेकंसजीवति॥ ५९
काम एवं स्वाद् तथा वर्णहीन होनेसे मनुष्यका मृत्यु त्रिमास
मेहोतीहै पराक्रमहीन एवंपाण्डुवर्ण शरीर बहुश्वासयुक्त
नित्यबहुमल त्यागहोनेसे एकमासजीवितरहताहै। ५८।५९

अथाब्दिकमृत्युलक्षणम्

जिह्वाकृष्णाभवेद्यस्यमुखंवाकुंकुमारुणम्॥ ई
दृशंलक्षणंयस्यतस्यमृत्युर्नसंशयः॥१६०॥ कु
ण्डलीपीड्यतेयस्यवातेनहनुबंधनं॥ आहारो
दह्यतेतेनसवर्षेणविनश्यति॥१६१॥ मूलेवृक्ष
स्यशाखांवास्फुलिङ्गोवह्निसन्निभः॥ प्रभाति
खड्गिर्मासैस्समानवोम्रियते ध्रुवम्॥१६२॥
जिसमनुष्यका जिव्हाकृष्णवर्ण और मुख कुंकुम सदृश होताहै
सोईमनुष्यकी मृत्युध्रुवहोती है कुण्डलीपीड्यमाना और वात
द्वाराहनुबंधनहोनेसे तद्वारा आहारका अपक्कताहोके वर्षपर्य
न्त मेमनुष्यकी मृत्युहोती है वृक्षकेमूल एवंशाखामे अग्निकणा
सदृशदर्शनहोनेसेषट्मासपर्य्यन्तमृत्युहोतीहै॥६०।६१॥६२॥
यस्यरेतोमलंमूत्रंक्षुतयुक्तंमलन्तुवा॥ इहै
कदाभवेद्यस्यअब्दंतस्यायुरिष्यते॥१६४॥
जिन्कावीर्य्य विष्ठा मूत्र छींकके सहित मलयुक्त होताहै अर्थात्
स्वभावसे अन्यथा होके एककालमेनाना प्रकार दर्शन होताहैसो
ई व्यक्ति एकवत्सर पर्य्यन्त जीवित रहताहै॥१६४
यस्यवैभुक्तमात्रस्यहृदये वर्द्धतेक्षुधा॥ जा
नीयादन्तवर्षेचसगतायुर्नसंशयः॥१६५॥
जिन्के भुक्तमात्र हृदयमे क्षुधाउत्पन्न होतीहै तस्य वत्सरान्त
न होनेसेमृत्युहोतीहै संशयनहीं॥ १६५॥

अथअर्द्धरात्रमृत्युलक्षणम्॥

शक्रायुधंचार्द्धरात्रे दिवा ग्रहणकस्तथा॥ दृ
ष्टमात्रेणसंक्षीणमायुर्जीवितमात्मवित्॥१६६॥

अर्द्धरात्रमेइन्द्रधनुः दर्शन एवंदिवामेचन्द्रग्रहण दर्शन एही प्रकार दृष्टमात्रसे आयुक्षयहोना है॥१६६॥

नासिकावक्रतामेतिकर्णयोरपिउन्नतिः॥नेत्रे
वाष्पसरेत्यस्यतयोरेवंसमुन्नतिः॥१६७॥॥

आरक्तमेतिवक्त्रञ्चजिह्वाह्रस्वायतेयदा॥तदा
प्राज्ञोविजानीयान्मृत्युमासिकमाप्नुयात्॥१६८

नासिकाका वक्रता कर्णकाउन्नति नेत्रकाबाष्प निःसरण एवं नेत्रकाउन्नतिरक्तवर्णमुख जिह्वाका ह्रस्वता एही सकलचिन्हजिन्का होय तस्यमृत्युएकमासकेमध्यमे होती है॥१६८॥

पिधायकर्णनिर्घोषंनशृणोति निरन्तरं॥ नप
श्येच्चक्षुषोर्ज्योतिर्यस्यआसन्नजीवितं॥१६९

कर्णमेसर्व्वदाशब्दबोधहोके निरन्तरश्रवणनहींकरते एवं नेत्र ज्योतिनाशहोतीहै एही रूपलक्षणदर्शनकरनेसेमृत्युहोतीहै

दीपनिर्व्वाणगन्धस्यसुहृद्वाक्यमरुन्धतीं॥ १६९
नजिघ्रन्तिनशृण्वन्तिनपश्यन्तिगतायुषः॥१७०

दीपनिर्व्वाणगन्धसुहृद्व्यक्तिकावाक्यएवं अरुन्धतीनक्षत्रजोव्यक्तिआघ्राणश्रवणएवंदर्शननहींपातेतिन्कोआयुहीनजानना॥७०

अथसद्योमृत्युलक्षणम्॥

शक्त्यावानरयानस्थोयोगन्तुर्दक्षिणां दिशं॥ स्व
प्नेप्रयातितस्यापिमुहूर्त्तेमृत्युर्नमुञ्चति॥१७१॥

जो व्यक्ति स्वसामर्थ्यपूर्व्वकवानरआरूढहोके दक्षिणदिक्मेभ्रमण करे एतादृशरूपस्वप्नमेदर्शनकरनेसे मुहूर्त्तमध्यमृत्युहोतीहै॥७१

नग्नंक्षपणकंस्वप्नेदृश्यमानंमहाबलं॥ एक
ह्वावाह्निकन्तस्यविद्यान्मृत्युमुपस्थितं॥१७२॥

नग्नलज्जाहीन महाबलीपुरुषस्वप्नमेदृश्यमानहोनेसे ए

क कि म्वा ह्य दिवसमे मृत्यु होती है सो जानना ॥१७२॥ * ॥

सूर्य्योदयेशिवायस्यक्रोशमायातिसन्मुखं॥
विपरीतंपुरीषम्वासद्यो मृत्युंसगच्छति॥१७३॥
सूर्य्योदयसमयमेश्रृगालआक्रोशकर्केजिन्केसन्मुखआवेअथवा यदि अतिशय विष्ठानिर्गतहोयतस्यसद्यमृत्युहोती है॥७३

अथदशाहेमृत्युलक्षणम्॥

यस्यवैमूत्रनमूहूर्स्यकूपोपमविशुष्यति॥पति
तस्यजलंपेयंदशाहंसोपिजीवति॥ १७४ ॥
जो व् क्ति का अवसार होके क्रमसे कूपकेसदृशमुखशुष्क होय एवंपतितकाजलपान करै सोई व्यक्ति दशदिवसपर्य्यन्तजीवनधारणकरतेहैं॥१७४॥

केशाङ्गारस्तथाभस्मशुष्कगाननतथानदी॥दृ
ष्टास्वप्नेदशाहेतुमृत्वेकादशकेदिने॥१७५॥
केश अङ्गार भस्म एवं शुष्कनदीस्वप्नमेदृष्टहोनेसेदशदिवस अतीत एकादश दिवसमेमृत्युहोती है ॥७५॥

अथत्रैवार्षिकमृत्युलक्षणम्॥

याम्यनासापुटेयस्यवायुर्यातिदिवानिशि॥त
थान्तमेवंतस्यायुःक्षयेदब्दत्रयेणहि॥१७६॥
दक्षिणनासापुटमेजिनका वायु दिवारात्रि वहमान होता है तिन्का आयुःक्षयहोके त्रिवत्सरकेमध्यमेमृत्युहोती है॥७६

अथद्वैवार्षिकमृत्युलक्षणम्॥

अकस्मात्वीक्षितयज्ञे पुरुषंकृष्णपिङ्गलं॥
अस्मिन्क्षणेतदरूणात्तसजीवेत्वत्सरद्वयं॥१७७॥
अकस्मात्यज्ञसमयमेयज्ञकुण्डद्वाराकृष्णवर्णवापिङ्गलवर्ण अथवा उभयवर्ण युक्तपुरुष अथवाअर्द्धनारीश्वर एवंनृसिंहादिमूर्तिदर्शनहोयतो सोई पुरुष द्वयसंवत्सर पर्य्यंतजीवित रहके उपरान्तमृत्युहोती है ॥१७७॥

अथदशमासिकमृत्युलक्षणम्॥

अरश्मिविघ्नसूर्य्यस्यवह्नेश्चैवं मलीनता॥ज्ञा
तकाद्दशमासास्तुततोर्द्धं नतुजीवति॥१७८॥
रश्मिहीन अर्थात् किरणहीन नानाविघ्नयुक्त सूर्य्य एवंमलिनता युक्त अग्निदर्शनकरनेसेदशममासकेऊर्ध्व मृत्युप्राप्तहोतीहै ७८

अथाष्टमासिकमृत्युलक्षणम्॥

गन्धपुष्पांशुकैर्मांसैः स्वंतनुं भूषितंनरः॥यःप
श्येत्स्वप्नसमयेसोऽष्टौमासांस्तुजीवति॥१७९॥
चन्दन पुष्प वस्त्र एवंमांसयुक्त निजशरीरभूषितस्वप्नसमयमेजोदर्शनकरतेहैं सोव्यक्तिअष्टममासावधिजीवित रहके मृत्युप्राप्तहोतेहैं॥१७९॥

अथषाण्मासिकमृत्युलक्षणम्॥

इन्द्रनीलनिभंव्योम्निनागवृन्दं यदीक्ष्यते॥इत
स्ततःप्रसरणंषण्मासंसनतुजीवति॥१८०॥
जोव्यक्तिआकाशमेनील आभा विशिष्ट एवं इतस्ततः विस्तृत सर्पसमूहकोदर्शनकरतेहैं सोईव्यक्तिषट्मासजीवितरहतेहैं ८०

सदाचोदरपूर्णस्तुवारीच्छाचदिवानिशि॥
प्रत्यक्तश्चचतुःपञ्चपश्चात्षण्मासजीवति॥१८१॥
सर्व्वदाजलाहारमे उदरपरिपूर्णरहतेहैं अथच दिवा रात्रि जलपानमेइच्छाहोतीहै सोईव्यक्तिकायदिचतुर्थ किम्वापञ्चमास अतीतहोयतथापि षण्मासमेमृत्युहोतीहै॥१८१॥

वेत्तिनीलानिवर्णस्यकटुम्लुलवणस्यच॥अक
स्मादन्यथाभावंषण्मासेनहिमृत्युभाक्॥१८२॥
जोव्यक्तिकाशरीर नीलवर्णहोताहै एवं कटुअम्लु लवण इत्यादिद्रव्यकेआस्वादनका अन्यथाभावप्राप्तहोताहै सोई व्यक्तिका षण्मासमेमृत्युहोतीहै॥१८२॥

द्रुतमारूढशकटःस्त्रीवन्तोयस्यमस्तकः॥प्रया
तियातितस्यायुःषण्मासाच्चपरिक्षयः॥१८३॥
अतिसत्वरगतिसे शकटआरोहण स्त्रीचिन्ह युक्त मस्तकव्यक्ति

जिन्केसन्मुखआवागमनकरतेहैं तस्यषण्मासमेमृत्युहोतीहै१८३

निजास्यप्रतिबिम्बं हिनीरदाम्बुदर्पणे॥उत्त
माङ्गंयोनपश्येत्तु षण्मासेनविनश्यति॥१८४॥
अपनाप्रतिमूर्त्ति मुख एवं मस्तक मेघजलमे अथवादर्पणादिमे
जिसमनुष्यकोदर्शननहीं होता तस्यषण्मासमेमृत्युहोतीहै १८४

पांशुराशिञ्चवल्मीकं यूपखण्ड मथापिवा॥ योऽव
रोहतिनौस्वप्नेसषष्ठेमासिनश्यति॥१८६॥ ॥
धूलिसमूह दीमक कीटकृत मृत्तिका स्तम्भयाग स्तम्भयष्टि-
और नौका एही सकलोपरि जो व्यक्ति स्वप्नमे आरोहण करते
हैं तस्य षष्ट मासमे मृत्यु होतीहै ॥१८६॥

रासभारूढमात्मानं तैलाभ्यङ्गञ्चखण्डितं॥ नि
यमेनस्वाश्रमेचेत्स्वप्नेपश्येत्सपूर्व्वयान्॥१८७
शमनन्तत्सुतम्वापियः पश्येत्स्वप्नगोचरे॥हता
ङ्गंशुष्ककाष्ठानिषष्ठेमासिननिष्ठति॥१८८॥ ॥
अपनेआत्माकोगर्द्धभारोहण एवंतैलाभ्यङ्ग और छिन्नाङ्ग एही नि
यमसे स्वालयद्वारास्वप्नमेसाक्षात्दर्शन एवं पूर्व्वोक्त गोधादि आरो
हणऔरशमन किम्वाशमनपुत्रकासाक्षात् दर्शन एवंछिन्नाकृति
शुष्ककाष्ठस्वप्नमेदृष्टहोनेसेसोईव्यक्तिकाषट्मासमेमृत्युहोतीहै ८७ ८८

लौहदण्डधरंकृष्णं पुरुषंकृष्णपिन्धनं॥ स्व
यमग्रस्थितंपश्येत सोपिमृत्युप्रजायते॥१८९
लौहदण्डधारीकृष्णवर्णपुरुष स्वयं कृष्णवस्त्र परिधान करके अ
ग्रस्थित स्वप्नमेदर्शनकरैतो षण्मासमे मृत्युहोतीहै ॥१८९॥ ॥

अथपञ्चमासिकमृत्युलक्षणम्॥

सामर्थेवानिधुवने ध्वान्तान्तेक्षोभिचेन्मनः॥ नि
श्चितंपञ्चमेमासिधर्म्मराजातिथिर्भवेत्॥१९०॥
स्वसामर्थमेरमणी रमणान्ते यदि अन्धकार दृष्टहोके क्षोभितहोय
तोसोई मनुष्यका पञ्चममासमे शमनावासमे अतिथिहोताहै ९०

पृथिवीदूर्भवेद्यस्य पदंखण्ड पदाकृतिः॥

पार्श्वेवाकुंडमेवापिपञ्चमासंसजीवति॥१९१॥

अकस्मात् वास्वप्नमेजो व्यक्तिपृथ्वीको द्विखण्ड वा चतुर्थांश अथवापार्श्वदेशमेकुण्डाकृतिदर्शनहोयसोई व्यक्तिपञ्चमासजीवितरहतेहैं ९१

पुस्तते भक्षते वापि पिशाचखरराक्षसैः॥भूतैः
प्रेतैःश्वभिःसिंहैर्गोमायुगृध्रशूकरैः॥१९२॥शर
भैःशलभैःसैनैरुष्ट्रैरश्वतरैर्व्वकैः॥ स्वप्नेसंजी
वितंत्यक्त्वावर्षान्तेयममीक्षते॥१९३॥ ॥

वृक्षारोहण और भक्षण अथवा पिशाच राक्षस गर्धभ भूत प्रेत कुक्कुर गृध्र सिंह शृगाल शूकर ऊंट फणिगणसेन अर्थात् वाज घोटकखच्चर एवं बक इत्यादि द्वारा स्वप्नमेजीवनाश दर्शन होनेसे मनुष्य वत्सरान्तमे यमदर्शनकरतेहैं॥१९२॥१९३॥

काकविट्सदृशोयस्य पांशुवर्षासमोमलः॥स्व
च्छायामन्यथापश्येत्यःसजीवतिपञ्चमम्॥१९४

काक के विष्ठाके सदृश एवं धूलिवर्षणकेसदृश जोव्यक्ति विष्ठा त्यागकरतेहैं अथवा स्वच्छाया अन्यथा दृष्टहोनेसे पञ्चमासाधिकजीवितरहतानहीं॥१९४॥

अथत्रिमासिकमृत्युलक्षणम्॥

प्रत्यूषस्यापियस्याशुहृदयंयस्यशुष्यति॥चर
णौचकरेवापित्रिमासंतस्यजीवनं॥१९५॥ ॥

प्रभातकालमेजिन्काहृदय चरण एवं हस्त शुष्कहोताहै सोई व्यक्ति त्रयमासपर्यन्तजीवितरहतेहैं॥१९५॥

अनिद्रोविद्युतंदृष्ट्वादक्षिणांदिशमास्थितां॥तद्दे
कोपिधनुर्व्वापिजीवितन्त्वत्रिमासिकं॥१९६॥

अनिद्रामेविद्युतदर्शनदक्षिणांशमेयदिहोय तत्काल धनुष दर्शन करनेसे त्रयमासजीवितरहके मृत्युहोतीहै॥१९६॥

अथसार्द्धमासिकमृत्युलक्षणम्॥

द्व्यहोरात्रंत्र्यहोरात्रंवायुर्व्वहतिसन्ततः॥सार्द्ध
कमासात्तस्यापिजीवितंकिलहीयते॥१९७॥

मनुष्यसम्बन्धमे यस्य नासादिपुटद्वाराद्रूपकिम्वात्रपदिवारा त्रिपर्य्यन्त यदि वायु निरन्तर प्रबलरूपसे वह मान होय तो सोई व्यक्तिका अर्द्धाधिक एकमास अर्थात् पञ्चचत्वारिंशद् दिनरात्र जीवित रहके तदनन्तर मृत्यु होती है ॥१९७॥

अथ मासिकमृत्युलक्षणम्॥

करावरुद्धः श्रवणं न शृणोति न च ध्वनिम्॥ स्थू
लं कृशं कृशं स्थूलं तदा मासानुवर्त्तते ॥१९८॥

जिन्का अकस्मात् हस्त अवरोध होता है एवं श्रवणमे शब्द श्रवण नहीं होता है एवं स्थूल व्यक्ति कृश और कृश व्यक्ति स्थूल दर्शन होता है सो ई व्यक्ति एक मासके मध्यमे पञ्चत्वप्राप्त होता है अर्थात् मृत्यु प्राप्त होता है ॥१९८॥

कालीं कुमारीं यः स्वप्ने बद्धीयात् बहुपाशकः॥
समासेन स मीक्षेत नगरीं शमनोषिताम्॥१९९॥

जो व्यक्ति कृष्णाङ्गी कुमारी को बहु रज्जुसे बन्धन करके स्वप्नमे दर्शन करते हैं सो ई व्यक्ति एकमासके मध्यमे शमन नगरको गमन करते हैं ॥१९९॥

घृते तैले दर्पणे च तोये वा तनु वानरीम्॥ यः प
श्येद् शिरः स्कन्धं मासादूर्द्ध्वं न जीवति ॥२००॥

घृत तैल दर्पण एवं जलमे वानरी का शरीरदर्शन अथवा शिरोहीन स्कन्धदर्शन करनेसे एकमासके ऊर्द्ध्व बचता नहीं अर्थात् मृत्यु प्राप्त होता है २००

अथ पञ्चदिवसे मृत्युलक्षणम्॥

यो न पश्येन्निजच्छायां दक्षिणाशां समाश्रिताम्॥
दिनानि पञ्च जीवात्मा पञ्चत्वं तत्र पश्यति सः॥२०१॥

जो मनुष्य अपनी छाया दक्षिण दिग्मे अर्थात् दक्षिणभागमे सम्यक् प्रकारसे दर्शन करै सोई व्यक्ति पञ्चमदिवस जीवित रहके पञ्चत्व प्राप्त होता है ॥२०१॥

नरो यो वानरारूढो प्रयाति पश्चिमां दिशं॥ स्वप्ने
सोऽन्हा पञ्च मे न पश्येत् संयमनीं पुरीं॥२०२॥

जो मनुष्य स्वप्नमे वानरारूढ पश्चिमदिग् मे गमन करते हैं सो
ईव्यक्ति पञ्चमदिवसमे यमालय गमन करते हैं ॥२०२॥

अथ त्रिदिवसमृत्युलक्षणम् ॥

नरनासापुटयुगे दशाहानि निरन्तरं ॥ वायुश्चे
त्सहसाक्रान्तिस जीवेद्दिवसत्रयम् ॥२०३॥

जो मनुष्यसम्बन्धमे नासिका पुटद्वयद्वारा निरन्तर दश दिव
स वायु खरतर अर्थात् अतिवेगसे वहमान होयतो सो ईव्य
क्तिका त्रिदिनान्तरमे मृत्यु होती है ॥२०३॥

अथ द्विदिवसमृत्युलक्षणम् ॥

नासावर्त्मद्वयं हित्वा वायुरुष्णा मुखाद्वहेत् ॥
संशेद्दिनद्वयाद्‌र्व्वाक्‌जीवितं तस्य निश्चितम् ॥२०४

नासापथद्वय त्यागकर्के उष्णा युक्त वायु यदि मुख प्राप्त होके
वहमान होय तो द्वयदिवसके मध्यमे प्राणसंहार होता है ॥२०४

अथ सर्पादिदंशने मृत्युलक्षणम् ॥

सूर्य्ये सप्तमराशिस्थे जन्मसंस्थे निशाकरे ॥ दं
शस्तत्पूर्णकालेप्यकाले तस्य नाशिता: ॥२०५

जो व्यक्तिके जन्मराशिके सप्तमस्थानमे सूर्य्य स्थित करते हैं
एवं जन्मराशिमे चन्द्र रहते हैं सो ई पूर्णकालमे यदि विषवन्त
सकल दंशन करै तो तिनके सो ई अकालमे काल प्राप्त होता है २०५

इति कालज्ञानं समाप्तं

तत्रादौ वैद्यलक्षणम् ॥ ॥

आयुर्वेदकृताभ्यास: सर्वेषां प्रियदर्शन: ॥ आ
र्य्य:शीलगुणोपेत एष वैद्यो विधीयते ॥ १ ॥ ॥

सम्यक् आयुर्वेदशास्त्र अभ्यास कर्के निपुण एवं सर्व्वजनस
मीप प्रियदर्शनयुक्त और सम्यक् प्रकारसे श्रेष्ठ एवं शीलस्व
भाव एतादृश गुणविशिष्ट मनुष्योंका वैद्यसंज्ञा है ॥१॥

अन्यच्च ॥ गुरोरधीताखिलवैद्यविद्य: पीयूषपा
णि: कुशल: क्रियासु ॥ गतस्पृहो धैर्य्यधर: कृपा

लुःशुद्धोऽधिकारीभिषगीदृशःस्यात् ॥२॥
गुरु उपदेशद्वारा सम्पूर्ण वैद्यविद्या अभ्यास होय एवं अमृततुल्य पाणि युक्त और क्रियामे प्रवीण तृष्णा करके रहित एवं धैर्य्यवान रूपविशिष्ट तथा सदा शुचि एवं आयुर्वेदाधिकारी एतादृश दश गुण युक्त वैद्य प्रशंसित हैं ॥२॥

अथाखिलवैद्यविद्याकथनं ॥

सुश्रुतेशल्यंशालाक्यंकायचिकित्साभूतविद्याकौमार भृत्यमगदतंत्रंरसायनतंत्रंवाजीकरणतंत्रमिति ॥३॥
अनन्तर अखिल वैद्यविद्या कहते हैं यथा शल्य शालाक्य कायचिकित्सा भूतविद्या कौमार भृत्य अगद तंत्र रसायन तंत्र वाजीकरण तंत्र एही अष्टाङ्ग सुश्रुतकृत उक्त हुआ ॥३॥

अथास्यप्रत्यङ्गलक्षणसमासः ॥

अथशल्यम् ॥

तत्रशल्यंनामविविधतृणकाष्ठपाषाणपांशुलोह लोष्टास्थिवालनखपूया॥स्रावान्तर्गर्भशल्योद्धरणार्थंयंत्रशस्त्रक्षाराग्निप्रणिधानव्रणविनिश्चयार्थंच ॥४॥
अनन्तर पृथक् पृथक् अङ्ग लक्षण कहते हैं तत्र शल्य नाम नाना प्रकार तृण एवं काष्ठ पाषाण पांशु अर्थात् रज लोह लोष्ट अर्थात् ढेला अस्थि केश नख पूया स्राव अन्तर्गर्भ अर्थात् जिस व्रण से विकृत रक्त स्राव होता है तत्र अन्तर्गर्भ एवं शल्य अर्थात् वाण इत्के उद्धारणार्थ जो यंत्र अर्थात् एतत्कर्म्मनिर्वाहार्थ निर्म्मित पदार्थ और शस्त्र क्षार अग्निप्रणिधान एतन्निश्चयार्थ तथा व्रण विनिश्चयार्थ शल्य तंत्र उक्त हुआ ॥४॥

अथशालाक्यम्

शालाक्यंनामऊर्द्धजत्रुगतानांरोगाणांश्रवणनयन वदनघ्राणादिसंश्रितानांव्याधीनामुपशमनार्थं ॥५॥
अनन्तर शालाक्य तंत्र कहते हैं शालाक्य अर्थात् ऊर्द्धजत्रुगत रोग यथा श्रवण नयन मुख नासिका इत्यादि मे आश्रित जो रोग तस्य

प्रशमनार्थे शालाक्यनामकथितहुआ॥५॥

अथकायचिकित्सानाम॥ ॥कायचिकित्सानामसर्व्वाङ्ग संश्रितानांव्याधीनांज्वरातीसाररक्तपित्तशोषोन्मादापस्मारकुष्ठमेहादीनामुपशमनार्थम्॥६॥

सर्व्वाङ्गाश्रितव्याधियथाज्वरअतिसाररक्तपित्त वात्त उन्माद अपस्मारकुष्ठमेहादिरोगोंकोउपशमनार्थकायचिकित्साकथितहुआ॥६

अथभूतविद्या॥ भूतविद्यानामदेवासुरगन्धर्व्वयक्षरक्षःपितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचेतसांशांतिकर्म्मवलिहरणादिग्रहोपशमनार्थम्॥७॥

देवता असुर गन्धर्व्व यक्षरक्ष पितृ पिशाच नाग ग्रह इत्यादि करके उपसृष्टचित्तवान् मनुष्योंकाशांतिकर्म्म और बलिदान ग्रहशान्ति इत्यादिके अर्थ भूत विद्या उक्त हुआ॥७॥

अथकौमारभृत्यम्॥ कौमारभृत्यंनामकुमारभरणधात्रीक्षीरदोषसंशोधनार्थंदुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानांचव्याधीनामुपशमनार्थम्॥८॥

कुमारोंके पालनपोषणार्थ एवं धात्री क्षीर संशोधनार्थ दुष्ट दुग्ध तथाग्रह एतज्जनितव्याधियोंके उपशमनार्थ कौमार भृत्य अर्थात् बाल चिकित्सा उक्त हुआ॥८॥

अथरसायनतंत्रम्॥

रसायनतंत्रंनामवयःस्थापनमायुर्मेधावलकरंरोगापहरणसमर्थञ्च॥९॥ ७॥ ॥

वयस्थापन तथा आयु धारणावती बुद्धि बल इत्यादिकावर्द्धक एवंरोग उपशमनमे समर्थ रसायनतंत्रकथितहुआ॥९॥

अथागदतंत्रम्॥ अगदतंत्रंनामसर्प्पकीटलूतावृश्चिकमूषिकादिदष्टविषव्यञ्जनार्थंविविधविषसंयोगविषोपहतोपशमनार्थम्॥१०॥

सर्प्प कीट अर्थात् कृमिविशेष लूता वृश्चिक मूष इत्यादिदंशन

से उत्पन्न विष एवं विविध प्रकार विष संयोगसे उपहत मनु
ष्योंके रोगको दूरिकरणार्थ अगद तंत्र उक्त हुआ ॥१०॥ ॥

अथवाजीकरणतंत्रं ॥ वाजीकरणतंत्रंनामअ
ल्पदुष्टविशुष्कक्षीणरेतसामाप्यायनप्रसादोप
चयजननिमित्तंप्रहर्षजननार्थञ्च ॥११॥ ॥

अल्प एवं दुष्ट तथा विशुष्क और क्षीण कामका बर्द्धन और प्र
सन्नता वृद्धि हेतुक जननका कारण तथा हर्ष जनन इत्यादि
के अर्थ वाजीकरण तंत्र उक्त हुआ ॥११॥

अथायुर्वेदाधिकारिणः॥

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानामन्यतममन्वयवशी
लशौर्यशौचाचारविनयशक्तिबलमेधाधृति
स्मृतिमतिप्रतिपत्तियुक्तंतनुजिह्वोष्ठदंताग्रमृजु
वक्त्राक्षिनासंप्रसन्नचित्तवाक्चेष्टंक्लेशसहञ्चभिष
क्शिष्यमुपनयेदतोविपरीतगुणंनोपनयेत् ॥१२॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यही यत्र अवयव मे कोई एक कोशीलशौ
र्य अर्थात् शौन्दर्य शौच अर्थात् पवित्र आचार विनय शक्ति बल
मेधा धृति अर्थात् धारणावती बुद्धि अस्मरण मति इत्यादि काजो
सिद्धि तद्युक्त और शरीर जिव्हा ओष्ट दंत कोमल वक्ता प्रशस्त ने
त्र नासिका चित्त वचन चेष्टा इत्यादि विशिष्ट क्लेशसहन शील ए
ही समस्त गुणयुक्त पुरुषको वैद्य आयुर्वेद पठनार्थ उपनयन क
रैं अतोविपरीतगुणमानकोनकरैं ॥१२॥

वेदेभ्यश्च समुत्पन्नस्तस्माद्वैद्योमपोदितः॥आ
युर्वेदोपनयनाद्वैद्योपिद्विजउच्यते ॥१३॥ ॥

वेदसे उत्पन्न अर्थ अध्ययन करनेसे वैद्य कथित हुआ और आयु
र्वेदके उपनयनसे द्विज नाम हुआ ॥१३॥

यस्तुकेवलशास्त्रज्ञः कर्मस्वपरिनिष्ठितः॥
समुह्यसातुरम्प्राप्यप्राप्यभीरुरिवाहवम् ॥१४॥

जो वैद्य केवल शास्त्रज्ञ अर्थात् वैद्य शास्त्र का ज्ञाता है परंच क

र्म्ममे अपरिनिष्ठित अर्थात्‌हस्तक्रियामेअज्ञान है सो वैद्य यादृश कादरमनुष्य संग्राममे प्राप्त होके मोह प्राप्त होते हैं तादृश आतुर की चिकित्सा करनेमे मोहको प्राप्त होते हैं ॥१४॥

यस्तु कर्म्मसु निष्णातो धार्ष्ट्याच्छास्त्र वहिष्कृतः॥
ससत्सु पूजां नाप्नोति वधं चार्हति राजतः ॥१५॥ ॥

जो वैद्य कर्म्ममे निष्णात अर्थात्‌ केवल हस्तक्रिया ज्ञाता है परन्तु धृष्ट होके शास्त्राभ्यास नहीं करते सो ई वैद्य श्रेष्ठों के मध्यमे पूज्य मान नहीं होते और राजद्वारा वधयोग्य होते हैं ॥१५॥

एकशास्त्रमधीयानो न विद्याच्छास्त्र निश्चयम्॥
तस्माद्बहुश्रुतः शास्त्रं विजानीयाच्चिकित्सकः ॥१६॥

एकशास्त्र अध्ययन करनेसे शास्त्र निश्चय नहीं होता अतएव वहुशास्त्राभ्याससे चिकित्सक होते हैं ॥१६॥

धर्म्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यम्मूलमुत्तमम्॥
रोगस्तस्यापहंतारं श्रेयसो जीवितस्य च ॥१७॥

धर्म्म अर्थ काम मोक्ष एतत्सम्पूर्णका आरोग्य उत्तममूल है धर्मादि कल्याण और जीवितका हननकर्त्ता रोग है ॥१७॥

क्वचिदर्थः क्वचिद्धर्म्मः क्वचिन्मित्रं क्वचिद्यशः॥ कर्म्माभ्यासः क्वचिन्नित्यं चिकित्सा नास्ति निष्फला॥१८॥

कदाचित्‌ अर्थ कदाचित्‌ धर्म्म क्वचित्‌ मित्र क्वचित्‌ यश कदाचि न्नित्य कर्म्माभ्यास एही सर्व्व प्राप्ति होता है अतएव चिकित्सा निष्फल नहीं होती ॥१८॥

व्याधेस्तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहम्॥ एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः ॥१९॥ ॥

उत्पन्न व्याधि एवं व्याधिका आदि कारण परिज्ञान एवं पीडाका निग्रह करना एही वैद्यका वैद्यत्व है परंतु आयुर्बलका स्वामी वैद्य नही होता॥ १९

यावत्कण्ठगतप्राणाः यावन्नास्ति निरिन्द्रियं॥
तावच्चिकित्सा कर्त्तव्या कालस्य कुटिला गतिः॥२०॥

यावत्काल पर्यन्त प्राण कण्ठगत रहे और यावत्पर्यन्त इन्द्री रहि

तनहोयतावत्कालपर्य्यन्तचिकित्साकरनाचाहिये अर्थात् कालकाकुटिलगतिहै ॥२०॥

चिकित्सितशरीरस्यनिष्कृतिन्नकरोतियः॥
सयत्करोतिसुकृतंतत्फलम्भिषगश्नुते॥२१॥

जोमनुष्यचिकित्सितशरीरकानिष्क्रयनहीं करते उन्केसुकृतकर्म्मकाफलवैद्यकोप्राप्तहोताहै ॥२१॥

भिषक्द्रव्याण्युपस्थातारोगीपादचतुष्टयम्॥
चिकित्सितस्यनिर्द्दिष्टंप्रत्येकंतच्चतुर्गुणम्॥२२॥

सद्वैद्यउत्तमद्रव्यपरिचारकधीमान्रोगी चिकित्सितके ए प्रत्येकचतुर्गुणनिर्द्दिष्टहैं ॥२२॥

श्रुतिपर्य्योवदातत्वंवहुशोदृष्टकर्म्मता॥दा
क्ष्यंशौचमितिज्ञेयंवैद्येगुणचतुष्टयम्॥२३॥

रोगकालक्षणऔरऔषधीकापरिणामचिकित्सामेवहुदर्शीशौचविशिष्ट इत्यादिचतुर्गुणयुक्तवैद्यहोतेहैं ॥२३॥

दृष्टकर्म्माचशास्त्रज्ञःसवैद्यःसिद्धिभाजनः॥एका
ङ्गहीनोनश्लाघ्यःपक्षहीनइवद्विजः॥ शास्त्रंगुरु
मुखोद्गीर्णमादायोपास्यचाऽसकृत्॥यःकर्म्मकु
रुतेवैद्यःसवैद्योऽन्येतुतस्कराः॥२४॥ २५॥ ॥

शास्त्रज्ञएवंवहुदर्शीजोवैद्यसोईसिद्धवैद्यपरन्तुएतदेकवर्जितहोनेसेश्लाघ्यविहीनयादृशपक्षहीनपक्षी तादृशहोताहै गुरुकेमुखारविंदसेउद्गीर्ण अर्थात् कथितशास्त्रकाग्रहणएवंवारम्वारउपाशनाद्वाराजोकर्म्मकर्त्तासोई वैद्यहे एतद्भिन्नजोकर्म्मकर्त्तासोतस्करहैं ॥२४॥२५॥

औषधंमूढवैद्यानांत्यजंतिज्वरपीडिताः॥
परसंसर्गसंसक्तंकलत्रमिवसाधवः॥२६॥

ज्वरपीडितमनुष्यकोमूढअर्थात् मूर्खवैद्यकाऔषधपरित्यागकरनाचाहिये यादृशपरपुरुषमेआसक्तस्त्रीकोसाधुजनत्यागकरतेहैं २६

आयुर्वेदंचिकित्साञ्चज्योतिषंधर्म्मनिर्णयम्॥

विनाशास्त्रेण यो ब्रूयात्तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥ २७ ॥
आयुर्वेद और चिकित्साशास्त्र एवं ज्योतिष तथा धर्म्मशास्त्र ए तत्सकलशास्त्र के विना जो आयुर्वेलादिज्ञानक हैं उन्को ब्रह्मघाती कहना चाहिये ॥ २७ ॥

अध्यायनोऽपि शास्त्राणि तंत्रायुक्तो विचक्षणः ॥
नाधिगच्छति सर्व्वार्थानर्थाभाग्यक्षयेयथा ॥ २८
चिकित्साशास्त्र अध्ययन करके तंत्रशास्त्र अपठनशील वैद्य को चिकित्सा सर्वार्थप्राप्त नहीं होता यादृश भाग्यहीन पुरुष को उपार्जित अर्थ नहीं लब्ध होता ॥ २६ ॥

कुचैलः कर्क्कशस्तब्धः कुग्रामः स्वयमागतः ॥ पं
चवैद्यान पूज्यंते धन्वन्तरिसमा यदि ॥ २९ ॥ ॥
मलिन वस्त्र धारणकर्त्ता अतिशय क्रोधी बुद्धिरहित नीचग्राम निवासी विना आवाहन स्वयमागामी एही पञ्चगुणयुक्त वैद्य कदाचिद्धन्वन्तरि सदृश होय तथापि पूज्यमान नही होता ॥ २९ ॥

उत्सृजत्यात्मनात्मानन्न वैद्यं परिशंकते ॥ तस्मा
त्पुत्रवदेनञ्चपालयेदातुरं भिषक् ॥ ३० ॥ ॥
रोग शरीर संहारकर्त्ता तत्र औषध द्वारा निवारण होने से रोगी वैद्य को शरीर समर्पण करते हैं इस प्रकार से चिकित्सक रोगी का पिता सदृश होता है अतएव वैद्य रोगी को पुत्र सदृश पालन करै ॥ ३०

अथप्रायश्चित्तहीने व्याधिभोग कथनम् ॥
प्रायश्चित्तविहीनानाम्महापातकिनामपि ॥ नरका
न्ते भवेज्जन्म चिन्हांकितशरीरिणाम् ॥ ३१ ॥ प्रतिज
न्मभवेत्तेषां चिन्हंतत्पापसूचितम् ॥ प्रायश्चित्ते कृते
याति पश्चात्तापवतांपुनः ॥ ३२ ॥ महापातकजंचिन्हं
जायते सप्तजन्मनि ॥ उपपापोद्भवं पञ्चत्रीणि पापस
मुद्भवम् ॥ ३३ ॥ दुष्कर्मजानृणांरोगा यांतिचोपक्रमैः शमं ॥
अनन्तर प्रायश्चित्त हीन व्याधिभोग कहते हैं प्रायश्चित्त करके हीन महापातकी जीवों का नरकवास होता है पश्चात् नरकान्ते चिन्हविशि

ष्ट जन्म प्राप्त होके प्रतिजन्ममे सोई पापका सूचक चिन्ह होता है प्रा
यश्चित्त करण द्वारा सो पाप चिन्ह सप्त जन्म पर्य्यन्त होता है उपपा
पज नित पञ्च जन्म एवं पापजनित चिन्ह त्रिजन्म पर्य्यन्त मनु
ष्योंका दुष्कर्म्मज रोग अनुष्ठान द्वारा शांत होता है ॥३१।३२।३३।३४

अथ महापातकरोगनिर्णयः

कुष्ठञ्च राजयक्ष्मा च प्रमेहो ग्रहणी तथा ॥ मूत्र
कृच्छ्राश्मरी कासाः अतीसार भगंदरौ ॥ ३५॥
दुष्टव्रणं गण्डमाला पक्षाघातोऽक्षिनाशनम् ॥
इत्येवमादयो रोगा महापापोद्भवास्मृताः ॥ ३६॥

कुष्ठ राजयक्ष्मा प्रमेह संग्रहणी कृच्छ्र मूत्र पथरी कास श्वास भगन्दर
अतिसार दुष्टव्रण गण्डमाला पक्षाघात अंध इत्यादि रोग महापातक
जनित हैं।३५।३६

अथोपपातकरोगनिर्णयः ॥

जलोदरीयकृत्प्लीहा शूलरोग व्रणानि च ॥
श्वासाजीर्णज्वरच्छर्दी भ्रममोह गलग्रहाः ॥
रक्तार्ब्बुद विसर्पाद्या उपपापोद्भवा गदाः ॥ ३७॥

अनन्तर उपपापोद्भव रोग कहते हैं जलोदरी यकृत्प्लीहा शूलरोग व्र
ण श्वास जीर्ण ज्वर वमन रोग भ्रम मोह गलग्रह रक्तार्ब्बुद विसर्प्प
इत्यादि रोग उपपापजनित हैं ॥ ३७॥

अथ सामान्यपापज रोगनिर्णयः ॥

दंतापतालकश्वित्रवपुकंपविचर्च्चिका ॥ व
ल्मीकपुण्डरीकाद्या रोगा पापसमुद्भवाः ॥ ३८॥

दंतापतालक अर्थात् दंतरुज चित्र वपुकंप विचर्च्चिका वल्मीक
पुण्डरीक इत्यादि रोग सामान्य पापजनित हैं ॥ ३८॥

अथातिपापरोगनिर्णयः ॥

अथार्शाद्या नृणां रोगा अतिपापोद्भवंति हि ॥ ३९॥

अनन्तर अतिपापोद्भव रोग कहते हैं अर्शादि रोग अतिपापज
नित हैं सो जन्मजन्मान्तर भोग होता है विना प्रायश्चित्त मनुष्य
पापसे मुक्त नहीं होते ॥ ३९॥ ॥ इति कालज्ञानं समाप्तम् ॥